CarbonVerse

भाग एक · मैदानी परिचय

हमारे खेतों की समृद्धि

शून्य बजट प्राकृतिक खेती: बेहतर उत्पादकता, पर्यावरण का पुनर्जीवन और कार्बन क्रेडिट की संभावनाएँ

डॉ. अजय सिंह तोमर और श्रीमती पूनम तोमर



मूंग के खेत और मेड़ों पर नीम। भारत के खरीफ परिवेश की चित्रकला।

पुस्तक में

समीक्षा के लिए पहला संस्करण · अक्टूबर 2026

01 खेत की समृद्धि को समझना

02 शून्य बजट प्राकृतिक खेती का अर्थ

03 जैविक खेती और शून्य बजट प्राकृतिक खेती

04 लाभ और बदलाव के व्यावहारिक प्रश्न

01

एक · पद्धति को समझना

खेत की समृद्धि को समझना

अच्छी फसल आने पर भी जरूरी नहीं कि किसान के पास अच्छी बचत हो। बीज, सिंचाई, मजदूरी और उधार का भुगतान करना होता है। घर के लोगों ने जो काम किया, उसके घंटे अक्सर अलग से गिने ही नहीं जाते। फसल बिकने के बाद हिसाब सामने आता है कि कमाई में से कितना बचा।

कृषि अर्थशास्त्र में यह सवाल बहुत महत्त्व रखता है। लेकिन किसान के पास बचा हुआ धन ही पूरी तस्वीर नहीं बताता। खेत को अगली फसल भी देनी है। उसकी मिट्टी और पानी की स्थिति ऐसी रहनी चाहिए कि आने वाले वर्षों में भी उससे आजीविका चल सके। इस मौसम की आय और आगे खेती कर पाने की क्षमता को साथ देखना होगा।

मैं इस पुस्तक की शुरुआत यहीं से करना चाहता हूँ।

हमारे खेतों में बहुत श्रम और ज्ञान लगा है। बुवाई कब करनी है, पानी कैसे देना है और अवशेषों का क्या उपयोग करना है, यह तय करते समय किसान जमीन की समझ के साथ घर की जरूरतें और खर्च भी देखता है। खेती में सुझाया गया कोई बदलाव इस जीवन में अपनी जगह बना सके, तभी उसे अपनाना संभव होगा। उसका लाभ उस व्यक्ति तक पहुँचना चाहिए जिसे रोज खेत में काम करना है।

शून्य बजट प्राकृतिक खेती को इसी नजर से समझना उपयोगी है। इसका विचार आकर्षक है: स्थानीय संसाधनों और मिट्टी की जैविक प्रक्रियाओं का बेहतर उपयोग हो, बाहर से खरीदे जाने वाले साधनों पर निर्भरता घटे और खेती की कमाई का अधिक हिस्सा किसान के पास बचे। यह विचार अलग-अलग फसलों और क्षेत्रों में कितना सफल होता है, इसकी जाँच जरूरी है। इस पुस्तक में हम यह भी देखेंगे कि खेती से होने वाले प्रमाणित जलवायु लाभ के लिए किसान को कार्बन क्रेडिट के माध्यम से अतिरिक्त प्रतिफल कैसे मिल सकता है।

खेत के तीन जुड़े खाते

परिवार की अर्थव्यवस्था

नकद, श्रम और पूरी लागत

पारिस्थितिक स्थिति

मिट्टी, पानी और चुने जीव

जलवायु परिणाम

संबंधित शुद्ध गैस और भंडार

एक परिणाम दूसरे का प्रमाण अपने आप नहीं है।

किसान के पास कितना बचता है

दो किसानों की फसल लगभग बराबर बिक सकती है, फिर भी मौसम के अंत में उनकी आर्थिक स्थिति अलग हो सकती है। एक ने सामग्री पर अधिक खर्च किया हो। दूसरे ने परिवार के श्रम या घर पर उपलब्ध साधनों का ज्यादा उपयोग किया हो। केवल बिक्री की रकम से यह अंतर नहीं समझ आएगा।

सही तुलना में पैसे के साथ काम का भी हिसाब रखें:

- खेत पर घोल बनाने में लगी सामग्री जोड़ें।
- सामग्री जुटाने, घोल तैयार करने और उसे लगाने का समय गिनें।
- देखें कि यह काम कौन करता है और उस समय उसका कौन-सा दूसरा काम छूटता है।

इसके बाद भी बचत अच्छी हो सकती है। काम का मूल्य जोड़ने से समझ आएगा कि बचत कितनी है और उसका बोझ कौन उठा रहा है।

जो उपज बाजार नहीं जाती, उसका भी मूल्य है। घर के लिए रखा अनाज, पशुओं को दिया चारा और मुख्य फसल के साथ उगाई गई दूसरी फसल परिवार की जरूरतें पूरी कर सकते हैं। खेत में लौटाए गए अवशेष का भी उपयोग है। बस यह ध्यान रहे कि एक ही सामग्री को पहले बिकी हुई मानकर और फिर खेत में मुफ्त उपलब्ध मानकर दो बार न गिन लें।

पहले मौसम में यह हिसाब कुछ कठिन हो सकता है। किसान नया तरीका सीख रहा होता है। सामग्री की व्यवस्था बदल सकती है। बचत दिखाई देने से पहले काम बढ़ सकता है। इस बीच घर का खर्च भी चलता है। इसलिए बदलाव सुझाने वाले को यह समझाना चाहिए कि परिवार उस अवधि को कैसे सँभालेगा।

शून्य बजट का व्यावहारिक अर्थ

शून्य बजट प्राकृतिक खेती एक सीधा प्रश्न रखती है: फसल की जरूरतों का कितना हिस्सा खेत के संसाधनों, स्थानीय सामग्री और जैविक प्रक्रियाओं से पूरा हो सकता है?

इसका मतलब यह नहीं कि श्रम या पानी की कोई लागत नहीं रह जाती। घर में पशु हैं तो उनकी देखभाल पर खर्च और समय लगता है। जैविक सामग्री जुटाने में काम लगता है। उपकरण घिसते हैं। खेत पर बनाया गया घोल भी कुछ अवयवों से ही बनता है। इन खर्चों को पहचानने पर ही पता चलेगा कि बाजार पर नकद निर्भरता कितनी घटी और किसान का प्रतिफल कितना सुधरा।

भारत के प्राकृतिक खेती संबंधी मार्गदर्शन में बीजोपचार, खेत पर तैयार घोल, भूमि आवरण तथा जड़ों के आसपास नमी और हवा के प्रबंधन पर ध्यान दिया गया है। बीजामृत, जीवामृत, आच्छादन और वापसा इसके परिचित आधार हैं। आगे के अध्यायों में हम इन्हें विस्तार से समझेंगे। [S01]

किसी एक घोल के साथ खेती की पूरी व्यवस्था को देखना भी जरूरी है। किसान को समझ आना चाहिए कि पद्धतियाँ उसकी फसल, मिट्टी और उपलब्ध पानी के साथ कैसे काम करेंगी। आच्छादन के लिए पर्याप्त सामग्री न हो, या उसकी तैयारी का काम मौसम के सबसे व्यस्त समय में पड़े, तो क्या किया जाएगा? खेत पर और प्रशिक्षण की व्यवस्था बनाते समय इन प्रश्नों का उत्तर चाहिए।

खेत हमें क्या बता सकता है

इस पद्धति का गंभीर अध्ययन करने के अच्छे कारण हैं। डडिगन और सहलेखकों ने 2023 में नियंत्रित प्राकृतिक खेती प्रयोगों से पैदावार और मिट्टी की नमी के उत्साहजनक परिणाम बताए। प्रभाव फसल और स्थान के अनुसार बदला। अध्ययन की अवधि में मृदा जैविक कार्बन पर पद्धति का सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण असर नहीं मिला। [S04]

बर्गर और सहलेखकों के 2025 के अध्ययन में आंध्र प्रदेश के कार्यक्रम से आर्थिक और जैव विविधता संबंधी लाभ मिले। अध्ययन किए गए तंत्रों में कुल मिलाकर पैदावार में कमी नहीं मिली। इससे कार्यक्रम के स्तर पर मिल सकने वाले लाभ समझने में मदद मिलती है। दूसरे क्षेत्रों में परिणाम कैसे होंगे, यह प्रश्न खुला रहता है। [S05]

इन निष्कर्षों के बीच अंतर समझना उपयोगी है। किसी अवधि में खेत की नमी बेहतर रह सकती है, जबकि उसी दौरान कार्बन भंडार में मापने योग्य वृद्धि न मिले। लागत घटने से किसान की आय बढ़ सकती है, भले ही पैदावार लगभग उतनी ही रहे। ये सभी परिणाम अपने-अपने कारण से महत्त्वपूर्ण हैं।

जहाँ परिणाम अच्छे नहीं मिलते, वहाँ भी उतनी ही रुचि लेनी चाहिए। एक फसल में उपयोगी तरीका दूसरी फसल के लिए बदलना पड़ सकता है। एक परिवार को होने वाली बचत ऐसे श्रम पर निर्भर हो सकती है जिसे दूसरा परिवार समय नहीं दे सकता। अनुसंधान से किसान को फैसला करने का बेहतर आधार मिलना चाहिए, जिसमें यह भी स्पष्ट हो कि कोई तरीका किन परिस्थितियों में उसके लिए उपयुक्त है।

कार्बन क्रेडिट कहाँ जुड़ता है

खेत के जलवायु योगदान से आय मिलने की संभावना इस पुस्तक का एक महत्त्वपूर्ण विषय है। इसे आगे बढ़ाने के लिए पहले समझना होगा कि कार्बन क्रेडिट किस परिणाम को मान्यता देता है।

प्रश्न यह है कि खेती में बदलाव से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कितना घटा, या वायुमंडल से कितनी कार्बन डाइऑक्साइड हटाई गई। तुलना उस स्थिति से होगी जो बदलाव के बिना बनी रहती। इसके लिए भरोसेमंद आधार स्थिति, अभिलेख और माप चाहिए। क्रेडिट जारी करने वाले कार्यक्रम के नियमों के अनुसार स्वतंत्र जाँच भी होगी।

वेरा की उन्नत कृषि भूमि प्रबंधन पद्धति उपयुक्त कृषि बदलावों के लिए एक मौजूदा रास्ता देती है। इसमें आधार स्थिति, अतिरिक्तता, मात्रा की गणना और अनिश्चितता संबंधी आवश्यकताएँ हैं। वर्तमान संस्करण के साथ प्रकाशित सुधार और स्पष्टीकरण भी लागू होते हैं। मान्यता चाहने वाली परियोजना को इन नियमों पर खरा उतरना होगा। [S07, S08]

प्राकृतिक खेती के लिए यहाँ अवसर भी है और शोध का काम भी। कौन-सी पद्धति से जलवायु लाभ मिलता है, उसे कैसे मापा जा सकता है और मौजूदा नियम उसे कहाँ स्वीकार कर सकते हैं, यह स्थापित करना होगा। जहाँ कमी रह जाती है, वहाँ स्पष्ट करना होगा कि उसे दूर करने के लिए कौन-सा प्रमाण या पद्धति में कौन-सा बदलाव चाहिए।

इस पुस्तक में रखा गया तर्क उस जाँच का सामना कर सके, यही मेरा उद्देश्य है। किसान को ऐसे वादे से कम लाभ होगा जो भुगतान तक पहुँचने के लिए जरूरी जाँच में टिक ही न पाए।

किस लाभ का स्रोत क्या है

एक खेत की मेड़ पर पेड़ हो सकते हैं, धान में पानी देने का तरीका बदला जा सकता है और मिट्टी के कार्बन भंडार में भी बदलाव आ सकता है। कई लाभ साथ मिल सकते हैं। दावा करने से पहले यह देखना होगा कि प्रत्येक परिणाम कहाँ से आया और उसका कोई हिस्सा पहले ही तो नहीं गिना गया है।

बायोचार या चट्टान चूर्ण के अपक्षय को साथ जोड़ने पर कुछ और प्रश्न उठते हैं। उनसे उपयोगी परिणाम मिल सकता है, पर उसे बिना जाँच मूल प्राकृतिक खेती पद्धतियों का प्रभाव नहीं कहा जा सकता। पशु अपशिष्ट से मीथेन घटाने वाली परियोजना का अपना हिसाब होगा। प्रस्तावित पायलट में इन प्रभावों को अलग पहचानने और इनके मेल को समझने की गुंजाइश होनी चाहिए।

खेत के कुछ लाभ कार्बन के हिसाब से बाहर रहेंगे। पानी की बचत या उपयोगी जीवों के लिए बेहतर वातावरण किसान के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हो सकता है। उन्हें उन्हीं संकेतकों से समझाना चाहिए जो उनके लिए उचित हैं। किसी सुधार को गंभीरता से लेने के लिए हर बार उसे कार्बन इकाई में बदलना जरूरी नहीं है।

इसलिए अध्ययन में खेत की कमाई, पर्यावरणीय स्थिति और मापे गए जलवायु योगदान का हिसाब साफ रहेगा। इन्हें साथ देखने से खेत को बेहतर समझेंगे। इनकी माप अलग रखने से निष्कर्ष अधिक भरोसेमंद होंगे।

व्यवस्था में किसान की जगह

कार्बन का बाजार मूल्य भुगतान के हिसाब की केवल शुरुआत है। नमूने लेने, प्रयोगशाला की जाँच, अभिलेख रखने और स्वतंत्र सत्यापन का खर्च होता है। किसान को पता होना चाहिए कि यह खर्च कितना है, कौन देगा और अंत में घर तक कितनी रकम पहुँचेगी।

सहमति देने से पहले किसान को साफ उत्तर मिलने चाहिए:

- मुझे कौन-सा काम करना होगा?
- मेरे खेत की जानकारी का उपयोग कौन कर सकता है?
- भुगतान से कौन-कौन से खर्च काटे जाएँगे?
- पैसा मेरे पास कब पहुँचेगा?

परियोजना विकासकर्ता, किसान संगठन और खरीदार को ये शर्तें सरल भाषा में समझानी चाहिए।

घर के भीतर यह भी देखना होगा कि अतिरिक्त काम किसके हिस्से में आता है। घोल बनाने या सामग्री जुटाने से महिलाओं या दूसरे सदस्यों का काम बढ़ता है तो उसे मूल्यांकन में शामिल करें। पट्टे या बटाई पर खेती हो रही है तो जिम्मेदारी और लाभ का बँटवारा खेती करने वाले व्यक्ति की परिस्थितियों के अनुसार हो।

एक ही संसाधन के कई उपयोग हो सकते हैं। आच्छादन में लगाया अवशेष पशुओं का चारा या घर का ईंधन भी बन सकता था। उसे भट्ठी तक भेजने से घर और खेत के लिए उसकी उपलब्धता बदलती है। संयुक्त परियोजना को लाभकारी कहने से पहले ऐसे चुनाव दर्ज होने चाहिए।

हम क्या जानना चाहते हैं

प्रस्तावित पायलट में पहले खेतों की मौजूदा स्थिति दर्ज होगी। उसके बाद स्पष्ट रूप से बताए गए बदलावों को समय के साथ देखा जाएगा। खेती के तंत्रों की तुलना होगी और अतिरिक्त उपायों के प्रभाव अलग पहचान में आएँगे। उत्पादन और आय के साथ पर्यावरण की स्थिति तथा प्रमाण से समर्थित जलवायु परिणाम जाँचे जाएँगे।

कुछ नतीजे उत्साह बढ़ा सकते हैं। कहीं बहुत कम अंतर मिले या कोई ऐसी समस्या सामने आए जिस पर काम करना हो। मिट्टी में कार्बन की मापने योग्य वृद्धि न मिले तो हमें यह बात कहनी होगी। इससे लागत या पानी में सिद्ध लाभ समाप्त नहीं होगा, लेकिन मृदा कार्बन का दावा बदलेगा। कार्बन में वृद्धि मिले, तब भी किसान के काम और कमाई को साथ देखना होगा।

प्रस्ताव यह है कि प्राकृतिक खेती को जुड़े हुए कृषि तंत्र के रूप में परखें और उसके सत्यापित जलवायु योगदान के लिए मान्यता का उचित रास्ता बनाएँ। यह काम इतना भरोसेमंद हो कि फैसला करने वाले किसान और कार्बन क्रेडिट को मान्यता देने वाली संस्था, दोनों के काम आ सके।

अगले अध्याय में हम पद्धतियों की ओर बढ़ेंगे: किसान को क्या करना होता है, उसका कारण क्या है और उसके बारे में हमें क्या समझना चाहिए।

02

एक · पद्धति को समझना

शून्य बजट प्राकृतिक खेती का अर्थ

बुवाई से पहले ही किसान परिवार कई फैसले कर चुका होता है। कुछ के लिए तुरंत पैसा चाहिए। कुछ के लिए अगले सप्ताह समय, गर्मियों में चारा या फसल की किसी खास अवस्था में पानी चाहिए। खेती का तरीका बदलने से ये जरूरतें बदलती हैं। इसलिए खेती में कुछ भी खर्च नहीं होगा, ऐसा मानने के बजाय इन जरूरतों को समझकर शुरू करना बेहतर है।

शून्य बजट प्राकृतिक खेती खेत और आसपास उपलब्ध संसाधनों का अधिक सोच-समझकर उपयोग करने पर जोर देती है। बीजामृत, जीवामृत, आच्छादन और वापसा इसके परिचित आधार हैं। बीज की देखभाल, खेत पर तैयार घोल, मिट्टी का आवरण और जड़ों के आसपास नमी तथा हवा का संतुलन पूरे फसल चक्र से जुड़े विषय हैं। S01

यहाँ बजट की बात हमें एक जरूरी सवाल तक लाती है: फसल से कमाई आने से पहले परिवार को कितना पैसा बाहर देना पड़ता है? खेती के लिए उधार लेने वाले किसान के लिए यह सवाल बड़ा है। जिस परिवार में समय और श्रम की कमी है, उसके लिए अतिरिक्त काम भी उतना ही बड़ा सवाल हो सकता है।

चार आधार पूरे फसल चक्र में

1 **बीजामृत**
बीज और शुरुआत

2 **जीवामृत**
तैयारी और जैविक प्रक्रियाएँ

3 **आच्छादन**
सतह और सामग्री

4 **वापसा**
जड़ों के आसपास नमी और हवा

परिचय का मानचित्र; मिश्रण या आवेदन की विधि नहीं।

इस नाम का संदर्भ

भारत में इस नाम से जुड़े आधुनिक आंदोलन का संबंध सुभाष पालेकर से है। इसके साथ किसानों द्वारा स्थानीय सामग्री, प्रकृति की प्रक्रियाओं और अपने क्षेत्र के अनुकूल खेती पर किए गए लंबे अनुभव भी जुड़े हैं। आज के सभी प्राकृतिक खेती कार्यक्रम मूल स्वरूप की हूबहू प्रतिलिपि नहीं हैं। प्रशिक्षण, संस्थागत सहयोग और व्यवहार में बदलाव हुए हैं। नीति आयोग की प्रशिक्षण मार्गदर्शिका इस व्यापक पृष्ठभूमि को प्रस्तुत करती है। [S01]

इस पुस्तक में खास पद्धति की चर्चा करते समय उसका पूरा नाम इस्तेमाल किया गया है। जहाँ बात व्यापक है, वहाँ प्राकृतिक खेती कहा गया है। किसी खेत की पहचान केवल नाम से नहीं हो सकती। कौन-सी फसल थी, क्या डाला गया, पानी और मिट्टी को कैसे संभाला गया और ऐसा कब से किया जा रहा है—यह विवरण जरूरी है।

इससे असहमति भी उपयोगी बनती है। कई बार दो लोग एक ही नाम पर बहस कर रहे होते हैं, लेकिन उनके मन में अलग-अलग खेती होती है। काम का स्पष्ट विवरण उन्हें तुलना का साझा आधार देता है।

शून्य का आर्थिक अर्थ

स्थानीय सामग्री से बना घोल नकद खरीद बचा सकता है। फिर भी सामग्री जुटाने, घोल बनाने, बर्तन साफ करने और खेत में लगाने में समय लगता है। यदि इससे कोई पुराना काम हटता है, तो बचा हुआ श्रम भी गिनना चाहिए। यदि नया काम पहले से व्यस्त दिन में जुड़ता है, तो उसकी जरूरत अलग दिखनी चाहिए।

इसलिए खेती का हिसाब दो तरह से देखें। नकद हिसाब में वास्तव में दिए और मिले पैसे आएँ। पूरी लागत के हिसाब में परिवार का श्रम, अपने संसाधन और उपकरणों का उपयोग भी आए। पहला हिसाब बताता है कि घर जरूरी भुगतान कर पाएगा या नहीं। दूसरा बताता है कि खेती अपने इस्तेमाल किए संसाधनों का कितना प्रतिफल दे रही है।

शून्य बजट को खरीदे हुए खेती के साधनों पर निर्भरता घटाने की दिशा के रूप में समझें। लागत को बही से गायब कर देना इसका उपयोगी अर्थ नहीं होगा। श्रम गिनने के बाद भी बचत हो, तो वह दावा अधिक मजबूत है।

चार आधार और उनके संबंध

बीजामृत का संबंध बीज या रोपण सामग्री और फसल की शुरुआत से है। जीवामृत खेत पर तैयार घोल तथा उनसे जुड़ी जैविक प्रक्रियाओं की चर्चा लाता है। आच्छादन मिट्टी के ऊपर आवरण और उसके लिए सामग्री की उपलब्धता का विषय है। वापसा जड़ों के आसपास नमी और हवा की ओर ध्यान दिलाता है। [S01]

ये सीखने के आधार हैं; चार अलग-अलग गारंटियाँ नहीं। अच्छा बीजोपचार खराब भंडारण की भरपाई नहीं कर सकता। जैविक घोल अनुचित सिंचाई को उचित नहीं बनाता। जो अवशेष पशु के चारे के लिए तय हो चुके हों, उन्हें पूरा का पूरा खेत पर बिछाया हुआ भी नहीं दिखा सकते।

अगले अध्याय इसी संबंध को खोलेंगे। क्या देखें, क्या लिखें और प्रदर्शन में कौन-सा सवाल पूछें—इन पर ध्यान रहेगा। मात्रा, संभाल या फसल के खास फैसले के लिए स्थानीय सिफारिश जरूरी हो, तो प्रशिक्षण अभिलेख में उसका नाम और स्रोत भी होना चाहिए।

खेत में जो उपलब्ध है वहीं से शुरू करें

पहले एक साफ सूची बनाएँ। खेत, पूरे चक्र की फसलें, पानी के स्रोत, उपकरण, पशु संसाधन, उपलब्ध जैव सामग्री और काम करने वाले लोगों को लिखें। वह समय भी लिखें जब पैसे या श्रम की सबसे अधिक कमी पड़ती है।

यह किसान की परीक्षा नहीं है। इसका उद्देश्य जरूरी सहायता पहचानना है। बिना पशु वाले परिवार से अपने पशु के संसाधन उपलब्ध मान लेने को नहीं कहा जा सकता। बटाईदार या पट्टेदार की योजना उसके खेती करने के अधिकार की अवधि से मेल खानी चाहिए। वर्षा पर निर्भर खेत और नियमित सिंचाई वाले खेत की जरूरतें अलग होंगी।

- गाँव में कहीं मौजूद सामग्री और परिवार को वास्तव में उपलब्ध सामग्री में फर्क करें।
- उसके दूसरे उपयोग और जुटाने में लगने वाला समय लिखें।
- जिस मौसम में सामग्री चाहिए, उसी समय की उपलब्धता जाँचें।
- योजना खेत से मेल न खाए तो सहायता किससे मिलेगी, यह पहले तय करें।

इस तरह सामान्य सलाह परिवार के काम की योजना बनती है।

पूरे मौसम में सीखना

अच्छा प्रदर्शन देखकर किसान समझ सके कि कोई काम क्यों किया गया। साथ में फसल, सामग्री, तारीख और निरीक्षण का अभिलेख हो। तस्वीर मदद कर सकती है, लेकिन बिना विवरण की तस्वीर यह नहीं बताती कि सफलता या कठिनाई का कारण क्या था।

सीखने के लिए खेत का हिस्सा परिवार के साथ चुनें। कितना क्षेत्र लेना है, यह उसकी निगरानी और जोखिम उठाने की क्षमता पर निर्भर होगा। इस पुस्तक में सबके लिए एक ही अनुपात नहीं दिया गया है। जहाँ संभव हो, उपयोगी तुलना रखें और किस्म, बुवाई या पानी का फर्क भी लिखें।

केवल कटाई के समय न मिलें। घोल देर से बना, मजदूर नहीं मिला या पानी की बारी छूटी—ऐसी बातें फसल की अंतिम तस्वीर से अधिक समझ दे सकती हैं। जो प्रशिक्षण कठिनाई सुनता है, वह केवल सफलता दिखाने वाले आयोजन से अधिक उपयोगी है।

नाम से परिणाम तय नहीं होता

उपज, बची हुई आय और मिट्टी में कार्बन परिणाम हैं। नाम उन्हें सिद्ध नहीं करता। उनकी अलग माप और उचित अवधि चाहिए। नकद खरीद घट सकती है, जबकि उसी अवधि में मिट्टी के कार्बन में मापने योग्य वृद्धि न मिले। कोई पारिस्थितिक सुधार बिक्री की रकम पर असर डालने में समय भी ले सकता है।

कार्बन क्रेडिट के लिए बदलाव, शुरुआती तुलना, माप और संबंधित कार्यक्रम के नियम भी जरूरी होंगे। पद्धति अपनाने का अभिलेख कार्रवाई का प्रमाण है। अपने आप में वह व्यापार योग्य कार्बन इकाई का प्रमाण नहीं है।

मौसम के अंत में किसान अपने शब्दों में बता सके: क्या खरीदा, क्या बनाया, क्या जुटाना कठिन था, कितना उत्पादन हुआ और अगली बार क्या बदलेगा। जब खेती का तरीका इस तरह समझ में आता है, तभी वह परिवार की उपयोगी जानकारी बनता है।

नाम, परंपरा और स्पष्ट प्रबंधन

प्राकृतिक खेती कई तरीकों का बड़ा परिवार है। शून्य बजट प्राकृतिक खेती एक खास दृष्टिकोण है, जिसका संबंध सुभाष पालेकर और यहाँ बताए चार आधारों से है। नीति आयोग की प्रशिक्षण सामग्री भारत में प्राकृतिक खेती के विकास का वर्णन करते समय पालेकर के योगदान का उल्लेख करती है। इस इतिहास को उचित स्थान दें। साथ ही हर प्राकृतिक खेती कार्यक्रम को हूबहू एक जैसा न मानें। [S01]

खेत पर जाकर यह फर्क आसानी से समझ आता है। किसान से पूछें कि वह इस नाम से कौन से काम समझता है। क्या घोल उसी विधि से बनता है जो प्रशिक्षण में बताई गई? आवरण जीवित पौधों का है, सूखे अवशेष का या दोनों का? पानी और फसल सुरक्षा के निर्णय कैसे होते हैं? पिछले वर्षों में क्या बदला? इन सवालों से काम का सम्मानपूर्वक विवरण मिलता है। परिवार को किसी नाम के प्रति निष्ठा साबित नहीं करनी पड़ती।

शोध के लिए इससे भी स्पष्ट विवरण चाहिए। प्रोटोकॉल बताए कि कौन से काम शोध उपचार की पहचान तय करते हैं, किन निर्णयों में किसान को स्वतंत्रता है और कौन से बदलाव दर्ज होंगे। स्थानीय परिस्थिति के अनुसार काम बदला जा सकता है। कठिनाई तब होती है जब अलग-अलग कामों को बिना विवरण के एक ही मान लिया जाए और बाद में उनके परिणामों की तुलना हो।

आत्मनिर्भरता के तीन अर्थ

परिवार बाहर से कम सामग्री खरीदे, यह आत्मनिर्भरता का एक रूप है। गाँव पहले बाहर से मिलने वाली सेवा खुद उपलब्ध करे, यह दूसरा रूप है। किसान निर्णय समझकर समय पर कर सके और हर बार विक्रेता या परियोजना कर्मचारी की प्रतीक्षा न करे, यह तीसरा रूप है। इन तीनों को अलग पहचानें।

मान लें कि बाहर की खरीद की जगह गाँव का समूह घोल बेचता है। किसान ने आपूर्तिकर्ता बदला है; जरूरी नहीं कि वह घोल खुद बनाने लगा हो। समय पर, उचित कीमत में सेवा मिले तो व्यवस्था उपयोगी हो सकती है। लेकिन उसके भुगतान को खाते में लिखें। उसे परिवार की बिना लागत बनी सामग्री न बताएँ।

जानकारी पाने में भी समय और मेहनत लगती है। समस्या पहचानना और सही समय पर मदद माँगना सीखना उपयोगी उपलब्धि है। फिर भी निर्भरता लौट सकती है, यदि बही केवल एक कर्मचारी समझता हो या उपकरण केवल एक व्यक्ति चला सकता हो। प्रशिक्षण के बाद निर्देश, परिवार को मिलने वाले अभिलेख और जरूरी काम जानने वाले दूसरे लोग भी होने चाहिए।

इसकी असली परीक्षा तब होगी जब प्रदर्शन खत्म हो, प्रशिक्षक न आए या परिवार का सबसे व्यस्त सप्ताह चल रहा हो। क्या काम सामान्य व्यवस्था में जारी रह सकता है? किसी तरीके की मजबूती इसी सवाल में दिखाई देती है।

खेत के चारों ओर दो सीमाएँ बनाएँ

पहली सीमा भूखंड की है। उसके भीतर कौन सी सामग्री आई, क्या उगा और कटाई में क्या बाहर गया? दूसरी सीमा परिवार और उससे जुड़ी व्यवस्थाओं की है। पड़ोसी से आई सामग्री, साझा मशीन, पानी की बारी और बदले में किया श्रम इसमें आते हैं।

केवल एक सीमा पूरी तस्वीर नहीं देती। दूसरे परिवार ने मुफ्त जैवभार दिया हो तो खेत की खरीदी सामग्री बहुत कम दिख सकती है। परिवार का नकद खर्च घट सकता है, जबकि खेत पुराने पोषक भंडार का उपयोग कर रहा हो। दोनों विवरण लिखने से ये संभावनाएँ दिखेंगी। परिणाम पहले से तय करने की जरूरत नहीं है।

चित्र में हर आने वाले तीर का स्रोत और हर जाने वाले तीर का ठिकाना लिखें। गोबर पड़ोसी से आया तो उसका नाम या पहचान दर्ज हो। बदले में चारा, पैसा या काम दिया तो वह भी आए। बिना किसी लौटाव के केवल सुंदर गोल चक्र बनाने के लिए आदान-प्रदान न गढ़ें।

समय की सीमा भी लिखें। एक फसल, पूरा फसल चक्र और जमीन के साथ कई वर्षों का संबंध अलग अवधियाँ हैं। एक मौसम की बचत को लंबे समय की पूरी आत्मनिर्भरता का प्रमाण नहीं बनाया जा सकता। आगे के हिसाब में इन अवधियों को अलग रखा गया है।

प्रशिक्षण के बाद किसान के पास क्या बचे?

अच्छा प्रदर्शन केवल समूह की तस्वीर न छोड़े। लौटते समय भाग लेने वाला सामग्री पहचान सके, काम का उद्देश्य समझा सके, चुनी विधि बता सके और जान सके कि कब सलाह लेनी है। उसे यह भी स्पष्ट हो कि किस बात का परिणाम अभी स्थापित नहीं है।

प्रदर्शन को सामान्य काम के क्रम में करें: सामग्री जुटाना, तैयार करना, उपयोग करना, सफाई, अभिलेख और निरीक्षण। हर चरण में लगने वाला समय देखें। काम करने वाले व्यक्ति से पूछें कि कहाँ कठिनाई है। मेज पर सुविधाजनक दिखने वाला उपकरण गीले खेत में ले जाना या घर पर साफ करना मुश्किल हो सकता है।

अगला निरीक्षण कब और कौन करेगा, यह पहले तय हो। फोन नंबर तभी उपयोगी है जब उत्तर देने वाला व्यक्ति उपलब्ध हो। लिखित निर्देश तभी मदद करेगा जब किसान उसे पढ़ सके या रोजमर्रा की भाषा में समझ सके। प्रस्तावित कार्यक्रम की शुरुआती अवधि में इन व्यवस्थाओं की भी जाँच होनी चाहिए।

किसान को प्रश्न पूछने की जगह दें। सामग्री कम पड़ गई तो क्या होगा? तय समय पर पानी नहीं आया तो किसे बताएँ? घोल की तैयारी में फर्क हुआ तो कैसे लिखें? इनका व्यावहारिक उत्तर समझ में आना, केवल चरण याद कर लेने से अधिक उपयोगी है।

दावे को साफ करने वाले सवाल

कोई कहे...	आगे यह पूछें
सामग्री में कुछ खर्च नहीं हुआ।	कौन सी खरीद रुकी, और घर की कौन सी सामग्री या मेहनत लगी?
फसल अधिक स्वस्थ दिखती है।	कौन सा निरीक्षण बदला, कब हुआ और तुलना किससे है?
मिट्टी सुधर रही है।	कौन सा गुण, किस विधि से और कितनी अवधि में मापा?
पूरा तंत्र सफल है।	किस फसल चक्र, परिवार और परिणाम के लिए?
अब कार्बन आय मिलेगी।	कौन सा योग्य परिणाम और विधि है; बिक्री तक क्या बाकी है?

खेत की बैठक में भी ये सवाल उतने ही उपयोगी हैं जितने शोध समीक्षा में। इनके कारण उत्साह एक ऐसे कथन में बदलता है जिसे दूसरा व्यक्ति समझ और जाँच सके। “अभी इसकी माप नहीं हुई” कहना भी स्वीकार्य उत्तर है। यह जानकारी छिपाने से बेहतर है।

सवाल का उद्देश्य किसान के अनुभव को खारिज करना नहीं है। अनुभव आगे की जाँच का रास्ता बताता है। मसलन, किसी हिस्से में नमी अधिक दिखी तो उसी जगह, उसी गहराई और मिलते समय पर दोबारा देखना उपयोगी होगा। अनुभव और माप साथ चल सकते हैं।

आगे तुलना करने से पहले खेत का परिचय

किसी तरीके की तुलना से पहले खेत का छोटा परिचय लिखें। फसल चक्र, पानी की व्यवस्था, पुराना प्रबंधन, प्रमुख सामग्री के स्रोत और काम करने वाले लोग आएँ। परिवार किस बदलाव पर विचार कर रहा है और किस परिणाम की सबसे अधिक जरूरत है, यह जोड़ें। परिचय वास्तविक खेत का हो; कहीं और के सफल प्रदर्शन की परिस्थितियाँ उधार न लें।

किसी परिवार को कम नकद खर्च चाहिए, किसी को भरोसेमंद उत्पादन और किसी को समय पर काम पूरा करने की सुविधा। सलाह इन्हीं जरूरतों से उपयोगी बनेगी। पहले से प्राथमिकता लिखने का एक लाभ यह भी है कि कटाई के बाद परियोजना अपनी सफलता की परिभाषा मनमाने ढंग से नहीं बदल सकेगी।

परिचय परिवार के साथ पढ़ें। छूटी बात जोड़ें और अनुमान को अनुमान लिखें। सबसे अधिक बोलने वाले व्यक्ति की बात ही पूरा परिवार न मान लें। तैयारी, पशुपालन, बिक्री और बही का काम अलग लोग कर सकते हैं। उनके अनुभव से तंत्र का अधिक सही विवरण बनता है।

अब जैविक खेती से तुलना का आधार स्पष्ट है। इस परिस्थिति में हर परिभाषित पद्धति क्या माँगती और क्या देती है? आगे के अध्याय इसी सवाल को खेत, परिवार के खाते और जलवायु मान्यता के प्रमाण तक ले जाते हैं।

बेहतर उत्पादकता का अर्थ क्या है?

उत्पादकता में उत्पादन को किसी निश्चित संसाधन से जोड़ते हैं। प्रति हेक्टेयर उपज, एक फसल और अवधि के लिए जमीन का सवाल है। प्रति कार्य दिवस उत्पादन या आय, श्रम का सवाल है। सिंचाई की इकाई पर उत्पादन, पानी का सवाल है। इनमें बदलाव अलग दिशाओं में हो सकता है।

केवल काल्पनिक क्षेत्र रूपांतरण में आधे हेक्टेयर से 2,000 किलोग्राम कटाई को 4,000 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर कहेंगे। इसका अर्थ यह नहीं कि उसी आधे हेक्टेयर से सच में 4,000 किलोग्राम निकला। मूल मात्रा और क्षेत्र गणना के साथ रखें।

छोटे मपे हिस्से से निकली दर को पूरे खेत की तौली कटाई भी न बताएँ। दोनों उपयोगी हो सकती हैं, लेकिन उनका आधार और अनिश्चितता अलग हैं। निरीक्षण कैसे चुना गया, यह भी अर्थ पर असर डालेगा।

कई फसलों में पहले हर उत्पादन की अलग मात्रा दें। एक फसल की उपज कम बदले, फिर भी पूरे चक्र में अतिरिक्त उपयोगी उत्पाद आ सकता है। दूसरी ओर एक अच्छी फसल के बाद कठिन फसल हो सकती है। पूरे तंत्र को अधिक उत्पादक कहने से पहले अवधि और क्षेत्र लिखें।

गुणवत्ता और उपयोगी मात्रा भी महत्वपूर्ण हैं। कुल कटाई, बिक सकने वाली मात्रा, घर का खाद्य और अस्वीकृत हिस्सा खाते में अलग भूमिकाएँ रखते हैं। बिकने योग्य उत्पादन बढ़ा हो तो वही नाम दें। उसे चुपचाप कुल जैविक उत्पादन न बनाएँ।

इस पुस्तक का प्रस्ताव इसलिए एक ही सर्वगुणी अंक नहीं देता। फसल, नकद, पूरी लागत की आय, काम, पानी और पारिस्थितिक निरीक्षण साथ देखें। कार्बन की अपनी गणना है। एक अनुपात से सबका उत्तर न माँगें।

परिवार के लिए कौन सा सुधार प्राथमिक है, यह पहले समझें। कम क्षेत्र वाला किसान, कम उपलब्ध श्रम वाला परिवार और अनिश्चित पानी वाला खेत अलग सवाल पूछ सकते हैं। स्पष्ट इकाई और वास्तविक जरूरत से तुलना अधिक उपयोगी होगी।

छोटा स्पष्ट विवरण नारे से मजबूत है

एक पृष्ठ का उपयोगी विवरण हो सकता है: भूखंड और अवधि; फसल चक्र; बीज और शुरुआत; तैयारी और उपयोग; आवरण; पानी; सुरक्षा; उत्पादन; काम और अनसुलझे निरीक्षण। भाषा ऐसी हो जिसमें परिवार अपने वास्तविक काम को पहचान सके।

इसमें हर प्रयोगशाला संख्या भरना जरूरी नहीं। उद्देश्य तंत्र की पहचान और परिवार के लिए उपयोग है। विस्तृत प्रमाण भूखंड, मौसम और बैच से अलग जुड़े रह सकते हैं।

अगली भेंट में विवरण को हुए काम से मिलाएँ। जरूरत पर तारीख वाला बदलाव जोड़ें। किसान ने किसी अच्छे कारण से काम बदला हो सकता है। कारण बचने से मौसम का अधिक उपयोगी अर्थ मिलेगा।

किसी कदम के न होने का कारण भी लिखें। सामग्री नहीं मिली, पानी नहीं आया, सलाह बदली या परिवार ने उसे उपयुक्त नहीं माना—ये अलग स्थितियाँ हैं। उन्हें एक ही अनुपालन की कमी में छिपाने से सीख कम होगी।

विवरण परिवार को लौटाएँ। किसान केवल जानकारी देने वाला न रहे; वह देख और सुधार सके कि उसकी खेती कैसे लिखी गई है। सही साझा विवरण अगली तुलना, प्रशिक्षण और शोध में काम आएगा।

एक नारा उत्सुकता जगा सकता है। खेत का यह छोटा, सही और समय के साथ सुधरता विवरण उस उत्सुकता को उपयोगी जानकारी में बदलता है। आगे का निर्णय उसी पर टिकेगा।

03

एक · पद्धति को समझना

जैविक खेती और शून्य बजट प्राकृतिक खेती

किसान के लिए दो पद्धतियों का अंतर आखिरकार खेत के काम में दिखाई देता है। बुवाई से पहले क्या बदलेगा? कौन-सी सामग्री बनानी या खरीदनी होगी? जरूरत के समय घर में पर्याप्त श्रम होगा या नहीं? उपज के थैले पर लिखे नाम से अधिक काम के उत्तर ये हैं।

जैविक खेती और शून्य बजट प्राकृतिक खेती की चर्चा कभी-कभी ऐसे होती है मानो एक को चुनने के लिए दूसरे को खारिज करना जरूरी हो। इससे चुनाव समझना कठिन होता है। बेहतर होगा कि हम देखें, दोनों में क्या साझा है, जोर कहाँ अलग है और हर पद्धति में किसान को वास्तव में क्या करना होगा।

दोनों कहाँ मिलती हैं

जैविक खेती का उद्देश्य व्यापक है। आईफोम की परिभाषा में मिट्टी और लोगों का स्वास्थ्य, स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल पर्यावरणीय प्रक्रियाएँ और न्यायपूर्ण संबंध शामिल हैं। इसके चार सिद्धांत स्वास्थ्य, पारिस्थितिकी, निष्पक्षता और देखभाल हैं। [S02]

इस पद्धति में किसान कम्पोस्ट बना सकता है, फसल चक्र अपना सकता है, हरी खाद उगा सकता है या जैविक फसल सुरक्षा का उपयोग कर सकता है। जैविक मानक खेत के बाहर से कुछ स्वीकृत सामग्री लेने की अनुमति भी दे सकते हैं। इससे किसान के लिए उपलब्ध विकल्प पता चलते हैं। यह नहीं कि हर जैविक किसान वही सामग्री खरीदता है। [S03, S11]

शून्य बजट प्राकृतिक खेती उत्पादन के लिए बाहर से खरीदे जाने वाले साधनों की जरूरत घटाने पर विशेष जोर देती है। बीजोपचार और खेत पर बने घोल के साथ आच्छादन तथा जड़ों के आसपास नमी और हवा का ध्यान रखा जाता है। स्थानीय संसाधनों की इसमें खास जगह है। [S01]

यहाँ काफी समानता है। जैविक किसान भी आच्छादन कर सकता है, कई फसलें उगा सकता है और मिट्टी की जैविक सक्रियता पर काम कर सकता है। ये तरीके किसी एक पद्धति तक सीमित नहीं हैं। अंतर समझने के लिए नाम से आगे बढ़कर उस खेत के वास्तविक प्रबंधन को देखना होगा।

भारतीय मानक भी इस समानता को स्पष्ट करता है। राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम के 2024 के आठवें संस्करण में विविध फसलें और पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण शामिल हैं। जैविक खेती को केवल बाजार से जैविक खाद खरीदने की व्यवस्था मानना सही नहीं होगा। फसल और पोषक प्रबंधन के प्रावधानों में आच्छादन वाली फसलें, फसल चक्र और खेत पर बनी जैव-अवक्रमणीय सामग्री का स्थान है। बाहर से कोई सामग्री लाने की अनुमति पूरी पद्धति का परिचय नहीं बन जाती। S11

किसान के काम में क्या बदलता है

सामग्री का स्रोत लें। जैविक किसान अपने खेत के संसाधन इस्तेमाल कर सकता है। संबंधित मानक के अनुसार अनुमति हो तो बाहर से सामग्री भी ला सकता है। किन साधनों और तरीकों का उपयोग हो सकता है, यह नियम तय करते हैं। S11

शून्य बजट प्राकृतिक खेती पूछती है कि बाहर पर निर्भरता कितनी कम की जा सकती है। यह खेती की तकनीक के साथ आर्थिक प्रश्न भी है। किसान को जानना होगा कि स्थानीय सामग्री पर्याप्त मात्रा में मिलेगी या नहीं, उसे जुटाने की लागत क्या होगी और तैयारी के लिए घर में किसके पास समय है।

कुछ खरीद बदलना एक कदम हो सकता है। खेत की व्यवस्था बदलना उससे बड़ा कदम है। फसल संयोजन, पानी और अवशेषों का उपयोग भी बदल सकता है। जैविक या प्राकृतिक, दोनों तरह की खेती में ऐसा हो सकता है। तुलना में दोनों को अच्छे प्रबंधन के साथ अपनी क्षमता दिखाने का उचित अवसर मिलना चाहिए।

शोध में इसका सीधा अर्थ है। कौन-सी फसल उगाई, सिंचाई कैसे हुई, जुताई की या नहीं, कितनी सामग्री लगाई और वह कहाँ से आई, इसका अभिलेख हो। पशुओं से मिलने वाले संसाधन इस्तेमाल हुए हों तो उन्हें भी लिखें। वरना प्रबंधन के एक निर्णय का असर हमें दो पूरी खेती पद्धतियों का अंतर लग सकता है।

नीचे दिए प्रश्न इस तुलना को काम का बनाए रखते हैं।

प्रश्न	जैविक खेती	शून्य बजट प्राकृतिक खेती
काम का आधार क्या है?	संबंधित उत्पादन मानक के अनुसार पर्यावरणीय प्रक्रियाओं पर आधारित प्रबंधन।	स्थानीय जरूरतों के अनुसार प्राकृतिक खेती, जिसमें खरीदे गए साधनों की जरूरत घटाने पर खास जोर है।
सामग्री कहाँ से आती है?	अपने खेत से और अनुमति प्राप्त बाहरी स्रोतों से।	खेत पर बने घोल और स्थानीय सामग्री से; बाहर की खरीद हो तो उसका हिसाब भी जरूरी है।
उर्वरता कैसे परखें?	पोषक स्रोत, फसल के साथ बाहर गए तत्त्व और मिट्टी में बदलाव दर्ज करें।	यही हिसाब रखें। जैविक सक्रियता के साथ पोषक आपूर्ति भी देखें।
लागत में क्या शामिल हो?	सामग्री, पानी, ढुलाई, उपकरण, मजदूरी और परिवार का श्रम।	यही खर्च, जिनमें खेत पर सामग्री तैयार करने का काम भी शामिल है।
कार्बन दावे के लिए क्या चाहिए?	ऐसा मापा गया परिणाम जो संबंधित क्रेडिट नियम पूरे करता हो।	वही प्रमाण और कार्बन क्रेडिट की आवश्यकताएँ।

ये प्रश्न बताते हैं कि खेत पर क्या देखना है। परिणाम उस खेत के प्रबंधन और परिस्थितियों पर निर्भर करेंगे।

सामग्री और श्रम का हिसाब

फसल खेत से जाती है तो उसे उगाने में लगे कुछ पोषक तत्त्व भी बाहर जाते हैं। उर्वरता बनाए रखने की योजना में स्पष्ट हो कि मिट्टी को क्या वापस मिल रहा है और किसकी भरपाई चाहिए। कितनी जैविक सामग्री उपलब्ध है, वह किन फसलों से आती है और उसका कितना हिस्सा पहले ही चारे या दूसरे काम में लगता है, यह देखना होगा।

मिट्टी और पौधों की पोषक जाँच से समझने में मदद मिलती है कि कई मौसमों तक यह योजना ठीक चल रही है या नहीं। पहली फसल का अच्छा परिणाम उपयोगी जानकारी है। किसान को यह भी जानना है कि खेत आगे उत्पादन दे सकेगा या नहीं।

खर्च को भी इतनी ही सावधानी से देखें। बाहर से लाई खाद का स्रोत और ढुलाई खर्च होता है। खेत पर बने घोल में भी अवयव और श्रम लगता है। एक खेत का हर खर्च जोड़कर दूसरे के संसाधन मुफ्त मान लें तो तुलना दोनों किसानों के लिए कम उपयोगी होगी।

सही समय पर उपलब्धता, मात्रा जितनी ही जरूरी हो सकती है। सामग्री गाँव में होते हुए भी जरूरत के समय जुटाना कठिन हो सकता है। कागज पर आसान लगने वाला काम मौसम के सबसे व्यस्त दिनों में पड़ सकता है। प्रशिक्षण में परिवार को इसकी योजना बनाने में मदद मिलनी चाहिए, जिसमें यह भी तय हो कि काम कौन करेगा।

शोध को ध्यान से पढ़ना

किसी अध्ययन का एक विवरण उसके निष्कर्ष पढ़ने का तरीका बदल सकता है। डडिगन और सहलेखकों के 2023 के प्रयोगों में जैविक उपचार में बाहर से खरीदी जैविक खाद थी और आच्छादन नहीं था। प्राकृतिक खेती के उपचार में आच्छादन और खेत पर बने घोल थे। सभी उपचारों में जुताई नहीं की गई थी। इसलिए नतीजे इन्हीं व्यवस्थाओं के हैं। वे यह नहीं बताते कि हर जैविक खेत का प्रदर्शन कैसा होगा। [S04]

किसी शोध का शीर्षक दोहराने से पहले उसकी तुलना देखें। 2023 के प्रयोग छोटे भूखंडों में दोहराव के साथ हुए। हर भूखंड में एक फसल थी और निर्धारित प्राकृतिक खेती फेलो उनका प्रबंधन करते थे। यह विविध फसलों वाले पूरे खेतों की हर विशेषता की तुलना नहीं थी। उपचारों के बीच आच्छादन और कई घोल एक साथ बदले थे। इसलिए उपचारों का अंतर हर घोल का अलग योगदान नहीं बताता। किसी उपचार को जैविक कहना भी यह स्थापित नहीं करता कि उसकी उपज के पास कोई खास प्रमाणन था। विधियों का विवरण प्रबंधन बताता है; प्रमाणन के लिए अलग प्रमाण चाहिए। [S04]

गाँव की चर्चा में किसी से यह वाक्य पूरा करने को कहें: “अध्ययन ने इन तरीकों की, इन फसलों पर, इन परिस्थितियों में तुलना की।” परिणाम आगे सुनाते समय ये बातें छूट जाएँ तो संदेश प्रयोग से बड़ा हो जाता है। निष्कर्ष के साथ उसका संदर्भ भी रखें। तभी उपयोगी परिणाम को समझदारी से अपने खेत में परखा जा सकेगा।

प्राकृतिक खेती की अलग-अलग सामग्रियों पर बाद का अध्ययन अधिक सटीक प्रश्न पूछने में मदद करता है: किसी परिणाम में एक विशेष घटक का कितना योगदान है? इससे यह तय करने में सहायता मिलती है कि किसान क्या अपनाए और किस विषय पर अभी और जाँच चाहिए। [S06]

प्रस्तावित पायलट में जैविक तुलना के लिए विश्वसनीय स्थानीय खेती तंत्र होना चाहिए। प्रचलित खेती की तुलना भी ऐसे तरीके से हो जो किसान वास्तव में अपनाते हैं। सभी का प्रबंधन स्पष्ट लिखें और सभी की माप समान सावधानी से करें। प्राकृतिक खेती के पक्ष में मजबूत तर्क के लिए जानबूझकर कमजोर तुलना की जरूरत नहीं है।

प्रमाणन आय और कार्बन क्रेडिट

खेती का तरीका बदलने के साथ कई पेशकशें आ सकती हैं। प्रमाणन, उपज के भाव और कार्बन भुगतान को अलग रखें।

- प्रमाणन से उत्पादन मानक के अनुपालन की पुष्टि होती है।
- बेहतर फसल भाव के लिए तैयार खरीदार और बिक्री की तय शर्तें चाहिए।
- कार्बन क्रेडिट के लिए योग्य जलवायु परिणाम चाहिए, जिसकी माप और सत्यापन संबंधित नियमों के अनुसार हो। S07, S11

केवल प्रमाणन से बिक्री की कीमत या कार्बन क्रेडिट स्थापित नहीं होता।

एनपीओपी में संचालक, उत्पाद, वैधता और लेनदेन के अभिलेख साथ देखें। उसका 2024 संस्करण संचालक के कार्य-दायरे के प्रमाणपत्र और लेनदेन प्रमाणपत्र में अंतर करता है। शोध के उपचार का नाम या सामग्री बेचने वाले का दावा किसान की उपज का प्रमाणपत्र नहीं है। वर्तमान आवश्यकताएँ प्रमाणन संस्था से जाँचें। S11

संशोधन का भी अपना दायरा होता है। एपीडा के 27 मार्च 2026 के नोटिस ने मसौदे पर सुझाव माँगे थे; 18 मई की अधिसूचना ने संशोधित अनुलग्नक 3(17) उसी दिन से लागू किया। यह अनुलग्नक प्रसंस्कृत जैविक खाद्य में मिलाए जाने वाले पदार्थों के बारे में है, खेत के छिड़काव की सूची नहीं। काम शुरू करने से पहले लागू दस्तावेज और उसके अंतर्गत आने वाली गतिविधि देखें। S54

पेशकश क्या है?	क्या दिखाने या समझाने को कहें?	किसका अलग हिसाब रखें?
खेती की पद्धति	मौसम के वास्तविक तरीके, सामग्री और स्थानीय सहायता।	परिवार क्या बदलेगा और काम कौन करेगा।
प्रमाणित जैविक उपज	नामित योजना और संबंधित संचालक तथा उत्पादों के दस्तावेज।	वैधता, शामिल उपज और बाकी आवश्यकताएँ।
फसल का बेहतर भाव	खरीदार, गुणवत्ता की शर्तें और खरीद की प्रस्तावित शर्तें।	सामान्य फसल आय और अभी अपुष्ट अतिरिक्त मूल्य।
कार्बन की संभावना	प्रस्तावित परिणाम, हिसाब की विधि और माप की जिम्मेदारियाँ।	भुगतान देय बनने से पहले की लागत और शर्तें।

कोई प्रशिक्षण, प्रमाणन या खरीदार से संपर्क की पेशकश करे तो चर्चा में ये प्रश्न पूछें। उत्तर उसी खेत और मौसम से जोड़ें। एक उत्पाद का प्रमाणपत्र हर फसल पर लागू नहीं होता; खरीदार से बातचीत मिली हुई आय नहीं है। प्रशिक्षण का वादा ऐसी तय सेवा बने जिसे किसान ले सके।

फसल की सामान्य आय का हिसाब अभी अपुष्ट बेहतर भाव या कार्बन भुगतान जोड़े बिना दिखाएँ। प्रस्तावित अतिरिक्त आय अलग रखें, उसकी शर्तें और लागत भी लिखें। तालिका चर्चा का साधन है, भरा हुआ आवेदन नहीं।

कम नकद खर्च के साथ उत्पादन और परिवार का काम भी जाँचें। मिट्टी के स्वास्थ्य की बेहतर जाँच की अपनी व्याख्या होगी; जलवायु परिणाम की अपनी माप। साफ अंतर परिवार को पेशकश परखने में मदद करते हैं।

खेत के अनुकूल फैसला

बदलाव सुझाने से पहले खेत को उसकी मौजूदा स्थिति में समझना चाहिए। पूरे साल की फसलें, उपलब्ध साधन, अधिक खर्च वाले काम और परिवार का कार्यभार महत्त्व रखते हैं। उनसे तय करने में मदद मिलती है कि कौन-से बदलाव सावधानी से आजमाए जा सकते हैं, जबकि परिवार अपने जरूरी दायित्व पूरे करता रहे।

प्रशिक्षण के बाद किसान समझा सके कि कोई तरीका क्यों अपनाया जा रहा है, क्या देखना चाहिए और कब उसे बदलने की जरूरत पड़ सकती है। अभिलेख उन फैसलों में मदद करें। वे खेत में काम करने वाले व्यक्ति के लिए भी उपयोगी हों और अध्ययन करने वाले शोधकर्ता के लिए भी।

शून्य बजट प्राकृतिक खेती के पक्ष में सबसे मजबूत आधार वहाँ मिलेगा जहाँ किसान अपने काम, कमाई और खेत की स्थिति में अंतर देख सके। यह पुस्तक उन अंतरों और उनके कारणों को समझने की कोशिश है। जहाँ सत्यापित जलवायु लाभ भी मिले, वहाँ उसे मान्यता और उचित प्रतिफल देने का विश्वसनीय रास्ता होना चाहिए।

04

एक · पद्धति को समझना

लाभ और बदलाव के व्यावहारिक प्रश्न

सलाह तब वास्तविक बनती है जब परिवार उसे पूरे मौसम निभाता है। कोई बीज जुटाता है, कोई सामग्री तैयार करता है और कोई फसल के भुगतान की प्रतीक्षा करता है। खेती में बदलाव का मूल्य इस जीवन में दिखाई देना चाहिए। केवल प्रशिक्षण के दिन के उत्साह से उसका निर्णय नहीं हो सकता।

शून्य बजट प्राकृतिक खेती का आकर्षण समझ में आता है। खरीदे हुए साधनों पर कम निर्भरता, स्थानीय संसाधनों का उपयोग और खेत की स्थिति पर अधिक ध्यान किसान के काम की बातें हैं। भारतीय परिस्थितियों में हुए कुछ अध्ययन इस दिशा में गंभीर शोध का आधार देते हैं। साथ ही यह देखना जरूरी है कि कौन-सा परिणाम दूसरी जगह भी मिल सकता है और कौन-सा स्थानीय परिस्थितियों पर निर्भर था। S04, S05

सबसे पहले क्या बदल सकता है

पहला बदलाव किसी खरीद का कम होना हो सकता है। उसके साथ नया काम भी जुड़ सकता है। बचत कहने से पहले दोनों लिखें। उधार मिलना कठिन हो तो परिवार अधिक श्रम देकर भी नकद खर्च घटाना चाहेगा। किसी दूसरे घर में श्रम की कमी हो सकती है और थोड़ा अधिक भुगतान करना उसे सुविधाजनक लगेगा।

खेत की स्थिति का अलग अभिलेख रखें। मिट्टी का आवरण, लगाया गया पानी, पौधों की शुरुआत और चुने हुए जीवों की उपस्थिति देखी जा सकती है। तुलना के लिए जगह, समय और देखने का तरीका मिलना चाहिए। सामान्य अनुभव अच्छा सवाल दे सकता है; माप उसे अधिक उपयोगी बनाती है।

संभावित कार्बन भुगतान को शर्तों सहित अलग दिखाएँ। जिस खेती की योजना को चलाने के लिए अभी से अनिश्चित भविष्य की बिक्री चाहिए, उसकी कठिनाई उस रकम के पीछे नहीं छिपनी चाहिए।

बदलाव का अपना कैलेंडर होता है

अगले मौसम के काम क्रम में लिखें: बुवाई, तैयारी, सिंचाई, निराई, कटाई और बिक्री। परिवार की दूसरी कमाई, पशुओं की देखभाल और जरूरी घरेलू खर्च भी जोड़ें, जहाँ उनका समय या पैसे पर असर पड़ता हो।

साल के कुल घंटों से जो कठिनाई नहीं दिखती, वह कैलेंडर में दिख सकती है। कोई काम साल भर में छोटा हो, लेकिन उसी सप्ताह करना असंभव हो सकता है जब सभी लोग पहले से व्यस्त हों। सस्ती सामग्री भी बुवाई के ठीक पहले न मिले तो योजना रुक जाएगी। सहयोग उसी वास्तविक अड़चन पर देना चाहिए।

समय	परिवार की जरूरत	सहयोग में क्या तय हो
बुवाई से पहले	बीज, सामग्री और संभव कार्य योजना	उपलब्धता, तैयारी की जानकारी और संपर्क व्यक्ति
पौधे जमने पर	समय पर निरीक्षण और पानी का फैसला	समस्या बढ़ने से पहले सलाह या खेत पर भेंट
फसल बढ़ते समय	उपलब्ध श्रम में पूरा हो सकने वाला काम	योजना से फर्क पड़ने पर सहायता
कटाई पर	उत्पादन और खर्च का भरोसेमंद हिसाब	सही तौल, गुणवत्ता और मौसम की समीक्षा
अगली फसल से पहले	अनुभव के आधार पर फैसला	क्या जारी रखें, बदलें, जाँचें या रोकें

उत्पादन को मानकर नहीं चल सकते

किसान को उचित लागत के साथ पर्याप्त उत्पादन भी चाहिए। परिवार गंभीर नुकसान नहीं सह सकता तो केवल कम खर्च उसका संतोषजनक उत्तर नहीं है। वहीं कम नकद जरूरत में समान उपज मिलना उपयोगी हो सकता है।

प्रस्तावित शोध में हर फसल और पूरे फसल चक्र का परिणाम इसलिए अलग देखना होगा। पहली फसल अच्छी होना आगे की पोषण जरूरतों का उत्तर नहीं है। पहला मौसम कठिन हो तो उसे बिना जाँच बदलाव की अनिवार्य अवस्था भी न कहें। बीज, मौसम, पानी, सामग्री, कीट और काम के समय को देखें।

स्मिथ और सहकर्मियों के विश्लेषण ने पोषक आपूर्ति तथा अधिक बाहरी साधन लेने वाली खेती में संभावित उपज जोखिम का प्रश्न उठाया था। वह उपलब्ध जानकारी पर आधारित विश्लेषण था, नया खेत प्रयोग नहीं। उसे स्थानीय माप की योजना में जगह मिले; हर प्राकृतिक खेत की विफलता की भविष्यवाणी न बनाया जाए। [S13]

काम करने वाला परिवार

घोल कौन बनाता है और बचा हुआ पैसा कौन संभालता है? जरूरी नहीं कि दोनों एक ही व्यक्ति हों। खेत के हिसाब में सस्ता दिखने वाला बदलाव घर के किसी सदस्य के कम पहचाने गए श्रम पर निर्भर हो सकता है।

जो लोग काम करते हैं, उनकी सहमति और सुविधा के अनुसार बात करें। मजदूरी और पारिवारिक श्रम अलग लिखें। सामूहिक प्रशिक्षण से यह अपने आप नहीं पता चलेगा कि किसी घर में नया काम दिनचर्या में कैसे समाएगा।

पट्टेदार और बटाईदार की स्थिति भी देखें। खेती करने वाला बदलाव के लिए तैयार हो सकता है, लेकिन लंबे निगरानी काल तक जमीन उसके पास रहने का भरोसा न हो। केवल जमीन के मालिक को लाभ देने वाली व्यवस्था खेती का खर्च उठाने वाले व्यक्ति को छोड़ सकती है। जिम्मेदारी और संभावित भुगतान वास्तविक खेती व्यवस्था के आधार पर पहले स्पष्ट हों।

एक संसाधन के कई उपयोग

फसल का अवशेष मिट्टी ढक सकता है, चारा या ईंधन बन सकता है, अथवा बिक सकता है। एक उपयोग में भेजने पर दूसरे के लिए उसकी उपलब्धता बदलती है। इसलिए आच्छादन की योजना वास्तविक बँटवारे से शुरू होनी चाहिए।

यही बात पशु संसाधन, पानी और साझा उपकरण पर लागू होती है। उपलब्धता दूसरे घर, सेवा देने वाले व्यक्ति या सामूहिक काम के समय पर निर्भर हो सकती है। भुगतान और श्रम के बदले श्रम का लेन-देन भी लिखें। स्थानीय होने का अर्थ मुफ्त या हर समय उपलब्ध होना नहीं है।

किसान संगठन प्रशिक्षण, उपकरण या अभिलेख में मदद कर सकता है। उसका मूल्य मिलने वाली सेवा और उसकी लागत से आँकें। पहली बैठक में दर्ज लोगों की संख्या अपने आप उपयोगिता नहीं बताती।

बाजार की जाँच योग्य योजना

खास पद्धति से उगाने पर बिक्री मूल्य अपने आप नहीं बढ़ता। अधिक दाम को आय में जोड़ने से पहले खरीदार, गुणवत्ता, मात्रा, ढुलाई, कटौती और भुगतान का समय स्पष्ट करें। सामान्य बाजार से तुलना में अस्वीकृत उपज और परिवहन भी गिनें।

प्रमाणीकरण उत्पादन मानक के पालन से जुड़ा है। कार्बन भुगतान योग्य जलवायु परिणाम तथा संबंधित नियमों और बिक्री से जुड़ा है। प्रशिक्षण में भाग लेने से इनमें से कोई रकम कमाई हुई नहीं हो जाती। [S11, S07]

पाठक के लिए व्यावहारिक नियम है: सामान्य फसल का हिसाब पहले स्पष्ट करें। अतिरिक्त और शर्तों वाली आय अलग पंक्ति में रखें।

सहयोग का ठोस अर्थ

किसान समझ सके कि वादा किया सहयोग कब मिला। तय अवस्था में नामित व्यक्ति आएगा। सामग्री का स्रोत तैयारी से पहले जाँचा जाएगा। अभिलेख परिवार की भाषा में वापस मिलेंगे। बताई गई समस्या पर उत्तर मिलेगा।

ये बातें हर खेत में निश्चित उपज या लाभ का वादा करने से अधिक उपयोगी हैं। इनकी जाँच भी हो सकती है। प्रस्तावित पायलट में छूटी सहायता भी दर्ज होनी चाहिए। केवल किसान का छूटा काम लिखने से परिणाम की अधूरी कहानी बनेगी।

अगला कदम परिवार तय करे

सीखने की शुरुआती अवधि के अंत में उत्पादन, लागत, श्रम, खेत के निरीक्षण और अनसुलझी कठिनाइयों का छोटा हिसाब हो। उसके आधार पर तय करें कि क्या जारी रखना और क्या बदलना है। विस्तार न करने का फैसला भी उपयोगी जानकारी दे सकता है।

भाग एक ने जैविक और शून्य बजट प्राकृतिक खेती को समझने की बुनियाद रखी है। दोनों की तुलना वास्तविक काम और परिणाम से करनी चाहिए। प्राकृतिक खेती का पक्ष तब मजबूत बनता है जब किसान को चल सकने वाली योजना, उपयोगी सहयोग और अपने खेत से मेल खाता प्रमाण मिले। आगे के अध्याय पद्धतियों, पूरे हिसाब और मापे गए जलवायु परिणाम की वैध मान्यता का रास्ता खोलेंगे।

शुरुआत परिवार के सवाल से करें

अपनाने की बात से पहले पूछें कि परिवार बदलना क्या चाहता है। कटाई से पहले कम पैसा लगाना और परिवार की मेहनत के हर दिन पर अधिक कमाना अलग लक्ष्य हैं। भरोसेमंद उत्पादन और किसी खास उपज का खरीदार मिलना भी अलग जरूरतें हैं। योजना में परिवार की प्राथमिकता उसी की भाषा में लिखें।

इतने ही प्रमुख परिणाम चुनें जिन्हें परिवार मौसम के बाद समझ सके। एक सवाल शुरुआती नकद जरूरत का, दूसरा उत्पादन का और तीसरा किसी कठिन काम का हो सकता है। शोध में अधिक जानकारी ली जाएगी, लेकिन किसान को अपनी मूल समस्या का उत्तर जानने के लिए तकनीकी रिपोर्ट पढ़ना अनिवार्य न हो।

मौसम के बाद इन्हीं जरूरतों पर लौटें। खरीद घटी लेकिन तैयारी के कारण दूसरा रोजगार छूटा तो दोनों बातें आएँ। उत्पादन अच्छा हुआ लेकिन असाधारण परियोजना सहायता लगी तो उसका संबंध दिखाएँ। आगे जारी रखने का निर्णय संबंधित जानकारी के साथ परिवार करे।

बुवाई से पहले एक काल्पनिक हिसाब

यह एक हेक्टेयर और एक फसल का बहुत सरल, पूरी तरह काल्पनिक उदाहरण है। यह किसी वास्तविक किसान का खाता या प्राकृतिक खेती की उपज का पूर्वानुमान नहीं है। मान लें कि वर्तमान योजना में उत्पादन का अपेक्षित मूल्य ₹80,000 और नकद खेती खर्च ₹40,000 है। प्रस्तावित विकल्प में उत्पादन का मूल्य ₹76,000 और नकद खर्च ₹30,000 है।

नकद खर्च ₹10,000 घटा, लेकिन उत्पादन का अपेक्षित मूल्य ₹4,000 कम हुआ। परिवार के श्रम और अपने संसाधन का मूल्य लगाने से पहले सुधार ₹6,000 है। अब मानें कि अतिरिक्त पारिवारिक श्रम का मूल्य ₹4,000 है। दूसरे बदले खर्च जोड़ने से पहले शेष सुधार ₹2,000 होगा। केवल “₹10,000 बचत” कहने से निर्णय का जरूरी हिस्सा छूट जाता है।

इस सरल तुलना में बराबरी पर रहने के लिए कितना उत्पादन मूल्य चाहिए? वर्तमान आय ₹80,000 में से ₹40,000 घटाकर ₹40,000 है। विकल्प में ₹30,000 नकद और ₹4,000 अतिरिक्त पारिवारिक श्रम मिलाकर ₹34,000 हैं। ₹40,000 बचाने के लिए उत्पादन मूल्य ₹74,000 चाहिए। यह इन बनाई हुई धारणाओं का बराबरी वाला हिसाब है। यह पायलट में स्वीकार्य उपज हानि की सीमा नहीं है।

काल्पनिक तुलना	वर्तमान योजना	वैकल्पिक योजना
उत्पादन मूल्य	₹80,000	₹76,000
नकद खेती खर्च	₹40,000	₹30,000
वर्तमान से अतिरिक्त पारिवारिक श्रम	आधार स्थिति	₹4,000
लिखे खर्चों के बाद आय	₹40,000	₹42,000

इस छोटे अतिरिक्त लागत वाले उदाहरण में जमीन, समान बना रहने वाला परिवार का श्रम, स्थायी साधन और वित्त लागत दोनों ओर छोड़े गए हैं। असली पूरे खाते में संबंधित लागत समान आधार पर आए। कीमत या उत्पादन थोड़ा बदले तो ₹2,000 का फर्क उलट सकता है। इसलिए एक ही अनुमान पर निर्भर न रहें। अध्याय 10 में पूरा हिसाब दिया गया है।

साल की बचत जरूरी समय पर मिलेगी भी?

साल का कुल परिणाम अच्छा दिख सकता है, फिर भी किसी महीने पैसा कम पड़ सकता है। फसल की आय आने से पहले सामग्री जुटानी पड़ सकती है। खरीदार अगले जरूरी भुगतान के बाद पैसा दे सकता है। कोई सेवा साल का श्रम बचाए, लेकिन उसी दिन नकद माँगे जब पैसा सबसे कम हो।

प्राप्ति और भुगतान को वास्तविक महीने या काम के सामने लिखें। किस दिन भुगतान जरूरी है और पैसा कब मिलने की संभावना है, दोनों दर्ज हों। बिना असली व्यवस्था के अपेक्षित अधिक कीमत या कार्बन बिक्री से इस कमी को भरा हुआ न दिखाएँ।

पायलट में परियोजना की दी सामग्री और बिना शुल्क सेवा अलग लिखें। अध्ययन के दौरान मिली सहायता परिणाम का हिस्सा है। सामान्य खेती में काम जारी रह सकेगा या नहीं, यह जानने के लिए देखें कि परिवार खुद वही सेवा कैसे जुटाएगा। वास्तविक उपलब्ध कीमत हो तो लिखें; नहीं हो तो लागत अनसुलझी है। अध्ययन में मुफ्त मिलने से कोई सेवा हमेशा मुफ्त नहीं हो जाती।

परिवार के लिए रकम के साथ समय का भरोसा भी महत्वपूर्ण है। देर से मिला छोटा भुगतान अगली बुवाई में काम न आ सके। इसलिए औसत आय के साथ नकद की उपलब्धता की तारीख देखें।

फसल में कठिनाई आए तो पहले से तय उत्तर हो

गंभीर समस्या पर कौन खेत आएगा? बदलाव की सलाह कौन दे सकता है? किसान को कितनी जल्दी उत्तर मिलेगा? बचाव का काम हुआ तो क्या लिखा जाएगा? बुवाई से पहले ये बातें तय हों।

तुलना को सुंदर बनाए रखने के लिए किसान से जरूरी बचाव का काम छिपाने को न कहें। निर्णय, तारीख, सामग्री और खर्च लिखें। तब शोधकर्ता बता सकेगा कि वास्तविक प्रबंधन मूल योजना से कैसे अलग हुआ। बचाव के बाद अच्छी फसल परिवार के लिए उपयोगी हो सकती है, लेकिन उसका वैज्ञानिक अर्थ अलग होगा।

पैसे की सहायता भी स्पष्ट हो। इस प्रस्ताव में उपज हानि की भरपाई या आय की गारंटी स्थापित नहीं है। आगे ऐसी मदद तय हो तो शर्त और धन का स्रोत लिखकर पहले समझाया जाए। मददगार बातचीत ऐसा वादा न बन जाए जिसे कार्यक्रम पूरा नहीं कर सके।

किसान को यह भी समझ आए कि समस्या बताने से उसकी बात दर्ज होगी। केवल सफल खेतों पर जाना या कठिन खेत को चुपचाप बाहर कर देना सीखने और भरोसे, दोनों को कमजोर करेगा।

काम जारी रहने की शर्त क्या है?

मौसम सफल होने के बाद भी किसान दोहराना न चाहे तो कारण महत्वपूर्ण हैं। सामग्री जुटाना कठिन था, प्रशिक्षण देर से मिला, दूसरी फसल अधिक उपयोगी लगी या तैयारी करने वाले व्यक्ति के पास समय नहीं रहा। इन उत्तरों से कार्यक्रम सुधर सकता है।

हर बार विस्तार से इनकार को जागरूकता की कमी न लिखें। पहले पूछें कि परिवार ने क्या अनुभव किया। इसी तरह कार्यक्रम में बने रहना हर हिस्से के लाभ का प्रमाण नहीं है। प्रशिक्षण, सामाजिक संबंध या किसी दूसरी सेवा के कारण भी परिवार जुड़ा रह सकता है।

समीक्षा में तीन बातें अलग करें: किसान अपने साधन से क्या जारी रखेगा, किस काम के लिए सहायता चाहिए और क्या बंद किया गया। किसान संगठन इससे समझ सकता है कि कौन सी सेवा वास्तव में उपयोगी है। सदस्य संख्या के बजाय समय पर सेवा और परिवार के अनुभव को महत्व मिले।

अगले मौसम में निर्णय बदले तो पुराना उत्तर न मिटाएँ। नई परिस्थिति लिखें। परिवार की जरूरत और उपलब्ध साधन बदल सकते हैं; उसी के साथ उसका निर्णय भी बदलना स्वाभाविक है।

पहली बैठक सबके लिए उपयोगी बने

घोल बनाने वाले से सामग्री और संभालने की बात पूछें। सिंचाई देखने वाले से पानी पर नियंत्रण पूछें। बेचने वाले से गुणवत्ता, कटौती और पैसा मिलने की बात करें। ये अलग लोग हो सकते हैं। केवल एक से पूरी बातचीत करने पर मुख्य अड़चन छूट सकती है।

सवाल का उद्देश्य समझाएँ। जानकारी खेती की सलाह, शोध या संभावित व्यावसायिक व्यवस्था में किस काम आएगी? परिवार से संबंधित प्रतिबद्धता की प्रति उसे दें। संपर्क व्यक्ति खोजने के लिए किसान को पूरी परियोजना का ढाँचा समझना जरूरी न हो।

बैठक के अंत में अगला काम स्पष्ट हो: सामग्री का स्रोत देखना, फसल निर्देश की समीक्षा, शुरुआती माप की तारीख या खरीदार के प्रस्ताव की जाँच। उपस्थिति और उत्साह शुरुआत हैं। चल सकने वाला अगला कदम बातचीत को सहायता में बदलता है।

क्षेत्र बढ़ाने से पहले पाँच सवाल

- इस मौसम में कौन से काम हुए और योजना से क्या बदला, क्या हम बता सकते हैं?
- उत्पादन, नकद जरूरत और पारिवारिक श्रम की समान आधार पर जानकारी है?
- अगली बार भी जरूरी सामग्री और समय पर मदद मिलेगी?
- काम करने वाले परिवारजनों की राय निर्णय में आई?
- अतिरिक्त भुगतान अनिश्चित रहते हुए सामान्य खेती की आय पर योजना चल सकती है?

हर परिवार के लिए एक जैसा अंक देकर निर्णय नहीं किया जा सकता। कमजोर उत्तर बताता है कि विस्तार से पहले किस काम की जरूरत है। स्पष्ट उत्तर परिवार को अगला कदम चुनने का आधार देता है। इस पद्धति का उपयोगी वादा यही है कि किसान अपने खेत में उसकी भूमिका समझकर तय कर सके।

खरीदार की पेशकश कटौती के बाद देखें

ऊँची बताई कीमत के बाद भी किसान को कम नकद मिल सकता है। 500 किलोग्राम उपज का काल्पनिक बाजार उदाहरण लें। सामान्य रास्ता पूरी 500 किलोग्राम मात्रा ₹20 प्रति किलोग्राम खरीदता है। ₹10,000 प्राप्त हुए। ढुलाई और बिक्री शुल्क ₹500 हों तो ₹9,500 बचते हैं।

दूसरा रास्ता ₹22 प्रति किलोग्राम कहता है, लेकिन 450 किलोग्राम ही स्वीकारता है। प्राप्ति ₹9,900 होगी। ढुलाई, छँटाई और बिक्री खर्च कुल ₹1,500 मानें तो नकद ₹8,400 बचता है। शेष 50 किलोग्राम तुलना की तारीख पर नहीं बिका है। वह उत्पादन खाते से गायब नहीं हो गया।

ये स्थानीय कीमत या किसी विशेष बाजार के खराब होने का प्रमाण नहीं हैं। सभी संख्याएँ समझाने के लिए बनाई गई हैं। इनसे पेशकश के पीछे के सवाल मिलते हैं: कितनी मात्रा खरीदेगा, कटौती क्या है, कितना काम बढ़ेगा, बची उपज का क्या होगा और पैसा कब मिलेगा?

समान शुरुआती उपज की काल्पनिक पेशकश	सामान्य रास्ता	प्रस्तावित रास्ता
खरीदी मात्रा	500 किलोग्राम	450 किलोग्राम
बताई कीमत	₹20 प्रति किलोग्राम	₹22 प्रति किलोग्राम
प्राप्ति	₹10,000	₹9,900
लिखे बिक्री खर्च	₹500	₹1,500
खर्च के बाद नकद	₹9,500	₹8,400
इस तारीख पर न बिकी मात्रा	शून्य	50 किलोग्राम

बची 50 किलोग्राम उपज आगे बिके या घर में आए तो वही वास्तविक घटना अलग लिखें। खेती की तुलना में पूरा उत्पादन बचे। बाजार की तुलना में वास्तविक नकद और भंडार दोनों दिखें।

किसान को केवल अधिक कीमत का प्रतिशत बताना पर्याप्त नहीं है। पूरी व्यवस्था परिवार के लिए उपयोगी हो तभी उस कीमत का लाभ है। खरीदार की शर्त पढ़ना इसलिए खेती की योजना का हिस्सा है।

लाभ किस व्यक्ति तक पहुँचा?

बची इनपुट रकम खेती करने वाले के पास रह सकती है, सेवा भुगतान में जा सकती है या दूसरे खर्च से बराबर हो सकती है। अधिक बिक्री कीमत में छँटाई और ढुलाई कट सकती है। कार्बन की संभावित प्राप्ति में कटौती और बँटवारा होगा।

हर लाभ का रास्ता देखें। परियोजना का कुल खाता अनुकूल होने से हर भागीदार को समान फायदा मिल गया, यह न मानें। खेती करने वाला, जमीन का मालिक और सेवा देने वाला अलग हो सकते हैं।

परिवार के भीतर भी यही सवाल है। तैयारी का काम कोई करे और बिक्री पैसा कोई संभाले। निर्णय कैसे होता है? काम और लाभ की बात संबंधित लोगों को समझ आई? परियोजना सुने, लेकिन एक प्रपत्र से परिवार की हर व्यवस्था सुलझ जाने का दावा न करे।

श्रमिक के लिए मजदूरी वाले दिन और काम का समय लिखें। एक खाते में कम मजदूरी खर्च बचत है; दूसरे व्यक्ति के लिए काम का अवसर बदला है। व्यापक लाभ की चर्चा में उसकी बात अप्रासंगिक नहीं हो जाती।

पड़ोसी और साझा संसाधन उपयोग करने वालों से भी पूछें कि जैवभार, पानी या सेवा की पहुँच बदली या नहीं। एक खेत का लाभ दूसरे पर बिना लिखे खर्च का स्थानांतरण न छिपाए।

उपज की गुणवत्ता का अपना सवाल है

खेती का नाम हर उत्पाद की पूरी गुणवत्ता का विवरण नहीं है। किसी खास गुण की जाँच करनी हो तो उसे परिभाषित करें, उचित परीक्षण चुनें और उपज समूह की पहचान बनाए रखें।

घर की खाद्य जरूरत में गई उपज भी दिखाई दे। उसकी मात्रा और घोषित मूल्यांकन नकद बिक्री से अलग लिखें। पैसा हाथ न बदले तब भी परिवार के लिए महत्व हो सकता है।

उसी मात्रा को बिक्री और फिर नया अतिरिक्त उत्पादन न गिनें। खाते में उत्पादन एक बार, उसके बाद बिक्री, घर का उपयोग और भंडारण का बँटवारा आए। इससे पूरा संबंध समझ में आएगा।

उपयुक्त प्रमाण के बिना स्वास्थ्य का वादा न करें। परिवार से ठोस बात हो: क्या उगा, संभाल कैसे हुई, संबंधित जाँच क्या हुई और उपयोग कैसे है? वास्तविक गुणवत्ता प्रमाण हो तो उसे उचित महत्व मिलेगा।

समीक्षा बैठक की शुरुआत और अंत

परिवार की मूल प्राथमिकता से बैठक शुरू करें। फिर उत्पादन, नकद, काम, सामग्री और खेत का रिकॉर्ड उस क्रम में देखें जो परिवार समझ सके। जानकारी, अनुमान और खाली जगह अलग चिन्हित हों।

अगले कुछ काम चुनें। बुवाई देर हुई तो सामग्री पहले जुटाने की जरूरत हो सकती है। बाजार प्रस्ताव कमजोर हो तो दूसरा खरीदार देखें। निरीक्षण अस्पष्ट हो तो बेहतर तुलना रखें। हर समस्या का उत्तर नई तकनीक या अधिक क्षेत्र नहीं है।

निर्णय लिखें: क्या जारी रहेगा, क्या बदलेगा, जरूरी मदद कौन जुटाएगा और अगली जाँच कब होगी? परिवार को प्रति दें। इसी से पुस्तिका पहली बार पढ़ने के बाद भी अगला मौसम तय करने में काम आएगी।

बैठक में केवल अच्छे परिणाम की पुष्टि न माँगें। किसान ने किसी काम को रोका हो तो कारण समझें। उस निर्णय में भी उपयोगी अनुभव हो सकता है।

पुस्तिका की बात गाँव में कैसे समझाएँ?

चर्चा एक सामान्य सवाल से शुरू हो सकती है: खेती से पैसा कितना आया और कितना सच में बचा? फिर काम की विधि, स्थानीय सामग्री और मिट्टी-पानी पर निरीक्षण आएँ। कार्बन की संभावना तब समझाएँ जब सामान्य खेती का विवरण साफ हो।

दो खेतों को देखकर तुरंत विजेता न चुनें। किस्म, बुवाई, पानी, पुराना प्रबंधन और निरीक्षण का समय पूछें। बड़ा दिखता पौधा अपने आप पूरे मौसम की उपज, आय या कार्बन भंडार नहीं बताता।

जैविक किसान को कमजोर उदाहरण बनाकर प्राकृतिक खेती का पक्ष रखने की जरूरत नहीं है। वास्तविक अच्छे प्रबंधन की निष्पक्ष तुलना अधिक उपयोगी होगी। जहाँ अंतर नहीं मपा, वहाँ साफ कहें।

चर्चा के बाद व्यक्ति एक अगला कदम समझ सके: अपना पूरा हिसाब लिखना, प्रशिक्षण में सही सवाल पूछना, सामग्री स्रोत देखना या स्थानीय सलाह से सीखने वाला हिस्सा चुनना। हर सुनने वाले को उसी दिन पूरा खेत बदलने का दबाव न हो।

ऐसी बातचीत किसान के अनुभव का सम्मान करती है। विचार आगे बढ़ता है, लेकिन फैसला खेत, परिवार और उपलब्ध प्रमाण से जुड़ा रहता है।

अपनी खेत बही

ये चुने अभिलेख इस पुस्तिका के चार पूरे अध्यायों के साथ हैं। परिवार बदलाव से पहले काम और निरीक्षण समझ सकता है। पूरा प्रस्तावित शोध और बारह प्रपत्र मुख्य पुस्तक में हैं।

प्रपत्र क सहभागी और खेत

विश्लेषण में सहभागी कोड रखें। संपर्क तथा सहमति से जोड़ सुरक्षित फाइल में हो। एक किसान कई खेत कर सकता है और खेत की खेती व्यवस्था बदल सकती है। संबंध समय के साथ सुरक्षित रखें।

मद	नियम
सहभागी और खेत कोड	स्थिर हों; हटे व्यक्ति का कोड दोबारा न दें
गाँव और स्थान	पहुँच नियंत्रण के अनुसार उपयुक्त विवरण
सीमा और क्षेत्र	तारीख, आधार और इकाई
खेती तथा पट्टा	कौन करता है, अवधि, प्रमाण की स्थिति
सहमति	संस्करण, तारीख, समझाना, दी प्रति
समूह और उपचार	वास्तविक आवंटन या मिलान और तारीख
भर्ती और पात्रता की कड़ी	योग्य सूची, निमंत्रण, मना करना या बाहर रखना तथा कारण जहाँ उचित रूप से उपलब्ध हो
फार्म, आवंटन और निरीक्षण का संबंध	आवंटन इकाई, फार्म, भूखंड, नमूना या मिश्रित नमूना तथा भ्रमण के अलग कोड; ऊपरी समूह बचाएँ
सुधार	पुरानी-नई मद, कारण, तारीख, व्यक्ति

प्रविष्टि स्वीकार करने से पहले दल के मानचित्र से पहचान और क्षेत्र मिलाएँ। जानकारी देने वाला खेती की व्यवस्था समझा सके, यह जाँचें। अधिकार का प्रश्न अनसुलझा हो तो समीक्षित प्रक्रिया में भेजें। फॉर्म में फैसला न गढ़ें।

आवंटित स्थिति, वास्तविक प्रबंधन और मिली सहायता अलग रखें। आवंटन प्रक्रिया, संस्करण और तारीख या मिलान फैसला जोड़ें। आज की खेती से पुराना आवंटन दोबारा न बनाएँ। भीतर का नमूना या अगला भ्रमण नया आवंटित फार्म नहीं है। पहुँच या भागीदारी बदले तो मूल श्रृंखला चुपचाप बदलने के बजाय दर्ज करें।

भागीदारी की हर अनुमति का उद्देश्य और दायरा नियंत्रित अभिलेख से जोड़ें। शोध में भागीदारी, खेत पर पहुँच, पहचान वाली तस्वीर और बाद का संपर्क अपने वास्तविक समीक्षित आधार पर हों; एक हस्ताक्षर चुपचाप सबकी अनुमति न बन जाए। भागीदारी बदले तो प्रभावी तारीख और वास्तविक व्यवस्था के अनुसार जरूरी प्रतिक्रिया दर्ज करें। इतिहास बचाएँ, लेकिन जानकारी रखने या खोलने का अधिकार न गढ़ें।

प्रपत्र ग काम और श्रम

हर काम में तारीख, खेत, फसल, काम, बैच, मात्रा और इकाई, उचित श्रमिक पहचान, समय, भुगतान और दूसरी लागत हो। रसीद जोड़ें। बाद का भुगतान तथा संसाधन विनिमय स्पष्ट हो।

मौसम से तारीख मिलाएँ। छूटा काम पूछें और बाद में याद से भरी मद अलग पहचानें। प्रशिक्षण, शुरुआती व्यवस्था और नियमित काम अलग रहें।

कामगार या सहमत समूह, वास्तविक घंटे और जरूरी काम अवधि अलग रखें। भुगतान, अवैतनिक या विनिमय काम की स्थिति, भुगतान तारीख या बाकी रकम और विश्लेषण की अलग मूल्य दर जोड़ें। श्रम का आँका मूल्य मजदूरी प्राप्ति नहीं है। साझा काम में बाँटे घंटे कुल से मिलें।

प्रपत्र घ घोल का बैच

चुनी तैयारी का संस्करण, सामग्री स्रोत और मात्रा, संग्रह तथा मिश्रण तारीख, बर्तन की पहचान, जिम्मेदार व्यक्ति, जरूरी दशा और खेत में उपयोग या निपटारा लिखें। जिन भूखंडों को सामग्री मिली और जितनी मात्रा लगी, वे बैच से जुड़े हों।

स्थानीय समीक्षा वाला निर्देश इस्तेमाल करें। न लिखी वास्तविक मात्रा को बाद में मानक विधि से न भरें। फर्क पड़ा तो वही प्रमाण का हिस्सा है।

बीज के काम में बीज समूह और बाँटे हिस्सों की पहचान, पहले का उपचार, समीक्षा से तय अनुकूलता, संभाल की तारीख और बुआई रिकॉर्ड जोड़ें। जमाव जाँच की मूल गिनती, कुल जाँची संख्या और तारीख रखें। सामग्री खाते में मूल तैयारी और अतिरिक्त पानी, बनी और पहुँची मात्रा, गीले तथा सूखे माप आधार अलग हों। बची या अस्वीकृत सामग्री और हर हस्तांतरण का गंतव्य दर्ज करें।

घटक तुलना में वास्तव में छोड़ा काम, बाकी रखे काम और समीक्षा में तय पानी या संभाल की तुलना लिखें। लगाने का उपकरण और खेत पर संबंधित आवाजाही पहचानी जा सके। विचलन तथा बचाव कार्य तुलना से जोड़ें; केवल बैच का नाम उपचार तय नहीं करता।

प्रपत्र ज कटाई और हिसाब

हर संग्रह में खेत, फसल, वास्तविक क्षेत्र, तौल और नमी आधार हो। उत्पादन का बिक्री, घर, बीज, चारा, नुकसान तथा अन्य उपयोग में बिना दोहराव बँटवारा करें। दाम, गुणवत्ता, कटौती, ढुलाई और भुगतान तारीख लिखें।

नकद में वास्तविक प्राप्ति तथा भुगतान आएँ। पूरी लागत में घोषित गैर-नकद मूल्य जुड़ें। पूरे खेत में अंदर के लेन-देन समायोजित हों। प्रीमियम और कार्बन परिदृश्य वास्तविक आय से अलग रहें।

कटाई, बिक्री और पैसा मिलने की तारीख अलग हों। बिना बिका भंडार, मिलने वाला पैसा और बिना चुकाए बिल पहचानें। रखी उपज, परिवार के काम, जमीन और अपने संसाधन की मात्रा तथा मूल्य आधार बचाएँ। वित्त लागत, मूलधन और उपकरण खरीद अलग हों। कर्ज का मूलधन दूसरी इनपुट खरीद न गिनें। उसी उत्पादन अवधि में उपकरण की पूरी खरीद और उसका मूल्यह्रास दोनों न लगाएँ। साझा खर्च के हिस्से मूल कुल से मिलें। फसल क्रम की तुलना में समान अवधि और क्षेत्र रहें।

हर फसल और उद्यम के उत्पाद की अलग पहचान, क्षेत्र या व्यवस्था, खेत में रहने की तारीखें, मात्रा, गुणवत्ता आधार और गंतव्य रखें। मूल्य समतुल्य या जमीन उत्पादकता की गणना के साथ मूल मात्रा बचाएँ। दाम, तुलना और अवधि बताएँ। कुल सूचक को संदर्भ फसल की वास्तविक कटाई न मानें।

कटी फसल का क्षेत्र और खेत में रहने की तारीख वास्तविक भूखंड तथा जोत रजिस्टर से जोड़ें। कई मौसम के फसल क्षेत्र का जोड़ वास्तविक जमीन से अलग नाम में रहे। उद्यम जोड़ते समय अंदर के उत्पाद तथा सामग्री लेनदेन मिलाएँ ताकि वे दूसरी बाहरी बिक्री या खरीद न बनें। परिणाम का आधार क्षेत्र और हिसाब की अवधि सुरक्षित रहें।

पुष्ट शून्य कटाई, बिना माप की कटाई और बिक्री न होना अलग रखें। हर स्थिति का निरीक्षण या बताया आधार बचाएँ। मुख्य फसल विफल हो तब भी दूसरी उपज, बचाव का काम और लागत दर्ज रहें। गायब जानकारी और विश्लेषण में उपयोग के निर्णय को प्रपत्र ञ से जोड़ें; अनजान मात्रा को शून्य न बनाएँ।

प्रपत्र झ पारिस्थितिक निरीक्षण

देखने से पहले संकेतक और विधि तय करें। खेत, स्थान, तारीख, समय, व्यक्ति, उपकरण, प्रयास, मौसम और संबंधित काम लिखें। मूल निरीक्षण, निकला सूचक और गुणवत्ता संकेत अलग हों।

छूटी भेंट शून्य नहीं। अनिश्चित प्रजाति को अनिश्चित रखें। तस्वीर का समय, स्थान, जरूरी सहमति और प्रमाण में भूमिका हो।

हर बताए पारिस्थितिक दावे को मूल निरीक्षण, निकली मात्रा, विश्लेषण संस्करण, संबंधित तुलना और अनिश्चितता से जोड़ें। स्पष्ट हो कि वह वर्णन, साथ बदलाव का संबंध या कारण का अनुमान है। सर्वेक्षण प्रयास और प्रभावी सर्वेक्षण क्षेत्र को वास्तविक जोत तथा कार्बन परियोजना सीमा से अलग रखें। सेवा सुधार और कार्बन पात्रता के दावे की अपनी प्रमाण कड़ी चाहिए।

पूरी पुस्तक का प्रपत्र झ भेंट, निरीक्षण, समीक्षा और विश्लेषण को जोड़ने वाली मदें विस्तार से देता है।

प्रपत्र ठ किसान विवरण और भुगतान

परिवार को मौसम, खेत, काम, उत्पादन, नकद खर्च, पूरी लागत का आधार और निरीक्षण दें। अधूरी बात समझाएँ और सुधार लें। भुगतान में देने-पाने वाला, कुल आधार, कटौती, रकम, तारीख और लेन-देन पहचान हो।

सवाल तथा विवाद का संपर्क भी हो। पढ़ या समझ न आने वाला विवरण लौटाना पर्याप्त नहीं है।

हर मद का प्रकार खेती प्राप्ति, काम या सेवा भुगतान, खर्च वापसी, मिली कार्बन प्राप्ति या दूसरी पहचानी सहायता हो। वास्तविक प्रमाण के अनुसार अनुमान, सहमति, भुगतान या विवाद की स्थिति रखें। देने वाला, पाने वाला और संबंधित शर्त दर्ज हों। आँकी बचत या अपेक्षित प्राप्ति को भुगतान न बताएँ। सकल से शुद्ध रकम समझाएँ और दूसरे खाते में पहले चुकाए खर्च से कटौती का दोहराव जाँचें।

हक या भुगतान का आधार वास्तविक शर्त और वित्त स्रोत से जोड़ें। जहाँ लागू हो, योग्य, मंजूर, देय, रकम भेजने का निर्देश, चुकाया और विवादित अलग रखें। लेनदेन का प्रमाण और सुधार बचें। हर कटौती को खर्च की एक पहचान से जोड़कर उस मद के अनुदान, पुराने बिल या दूसरे भुगतान से मिलाएँ। अग्रिम का बाद का उपयोग, नया शुल्क और नकद वापसी अलग हों। प्रस्तावित रिजर्व का उद्देश्य तथा वास्तविक अधिकार चाहिए। बिक्री न होना अपने आप नहीं बताता कि कौन सी जिम्मेदारी खत्म हुई।

विवरण का संस्करण, लौटाने की तारीख, स्पष्टीकरण और अधूरा सुधार दर्ज हों। प्रति मिलना उसकी बातों से सहमति नहीं है।

कुछ उपयोगी शब्द

शून्य बजट प्राकृतिक खेती: खरीदे खेती साधनों पर निर्भरता घटाने, खेत पर सामग्री बनाने और जुड़े पारिस्थितिक प्रबंधन पर जोर देने वाली पद्धति। इसमें श्रम और संसाधन की लागत समाप्त नहीं होती।

जैविक खेती: पारिस्थितिक खेती का दृष्टिकोण, जिसके प्रमाणित उत्पादन को लागू जैविक मानक से जाँचा जाता है। यह केवल रासायनिक सामग्री की जगह खरीदी जैविक सामग्री डालना नहीं है।

बीजामृत: पद्धति से जुड़ी बीजोपचार की खेत पर तैयार सामग्री। चुने मार्गदर्शन से तैयारी, संभाल और फसल उपयुक्तता स्पष्ट होनी चाहिए।

जीवामृत: खेत के उपयोग का जैविक घोल। उसका नाम हर पोषक तत्व की पूर्ति या कार्बन हटाने की निश्चित दर सिद्ध नहीं करता।

आच्छादन: मिट्टी पर उपयुक्त सामग्री या प्रबंधित जीवित आवरण रखना। उसका प्रकार, समय और सामग्री के दूसरे उपयोग दर्ज हों।

वापसा: प्राकृतिक खेती में जड़ क्षेत्र की नमी और हवा पर ध्यान, जिसे फसल के अनुकूल निरीक्षण और प्रबंधन में बदलना होता है।

स्रोत और प्रमाण टिप्पणी

S01 · Empowering Farmers Natural Farming Training Toolkit and Best Practices Guide

NITI Aayog · 2026

https://www.niti.gov.in/sites/default/files/2026-03/Training-Manual-English.pdf

प्राकृतिक खेती की आधिकारिक अवधारणाएँ, शब्द और काम का विवरण।

प्रशिक्षण निर्देश अपने आप मैदानी प्रयोग नहीं हैं। पद्धतियों की सामान्य रैंकिंग या बिना मूल प्रमाण के बताए संख्यात्मक लाभ को हर खेत का परिणाम न मानें। चक्र 12P में नया आधिकारिक PDF मिला; छपे पृष्ठ 61 की तालिका 6.1 और पृष्ठ 22 का चुना बीजोपचार पाठ देखा। मिट्टी मात्रा का अंतर सुलझा नहीं है।

S02 · Definition of Organic Agriculture

IFOAM Organics International · 2008 definition

https://www.ifoam.bio/why-organic/organic-landmarks/definition-organic?result=5

जैविक खेती में पारिस्थितिक प्रक्रियाएँ और सामाजिक सिद्धांत भी हैं; केवल खरीदे इनपुट बदलना उसका पूरा अर्थ नहीं है।

परिभाषा से हर जैविक खेत का प्रदर्शन स्थापित नहीं होता।

S03 · What is organic

IFOAM Organics Europe · Undated

https://www.organicseurope.bio/what-is-organic/

जैविक तंत्र के सिद्धांत केवल कुछ इनपुट से बचने तक सीमित नहीं हैं।

यूरोप के नियम भारत पर लागू नहीं किए गए हैं। मूल अध्ययन के बिना स्वास्थ्य या संख्यात्मक परिणाम का दावा न लें।

S04 · Natural farming improves crop yield in SE India when compared to conventional or organic systems by enhancing soil quality

Duddigan et al. · 2023

https://link.springer.com/article/10.1007/s13593-023-00884-x

परिस्थिति के अनुसार उपज और नमी के निष्कर्ष। उपज की तुलना अपने प्रयोग के z स्कोर से है; बदलते फार्म और फसल समय के साथ बदलाव पढ़ने की सीमा हैं। अध्ययन अवधि में जैविक कार्बन या थोक घनत्व पर महत्वपूर्ण उपचार प्रभाव नहीं था। नमी उपकरण की गहराई तथा माप के अवसर, हाथ से छाँटकर केंचुए गिनना और तराजू मिलने पर वजन लेना पारिस्थितिक निरीक्षण की सीमा स्पष्ट करते हैं।

लंबे समय उन्हीं किसानों की बदलाव यात्रा, वास्तविक उपज का पूर्वानुमान या हर जैविक व्यवस्था की तुलना नहीं। जैविक भूखंड बिना आच्छादन और सब उपचार बिना जुताई थे। फार्म, प्रयोग और उपलब्ध उपज अभिलेख अलग हैं; पूरे आँकड़ों तथा मॉडल का मिलान बाकी। छोटे एकल फसल भूखंड पूरे विविध फार्म या प्रमाणन को स्थापित नहीं करते। केंचुओं का पारिस्थितिक या आयु समूह दर्ज नहीं था; केवल संख्या से सूक्ष्मजीवी गतिविधि या पारिस्थितिक सेवा सिद्ध नहीं होती। अध्ययन का नमूना आकार पायलट की स्वीकृत विधि नहीं है।

S05 · India’s agroecology programme Zero Budget Natural Farming delivers biodiversity and economic benefits without lowering yields

Berger et al. · 2025

https://www.nature.com/articles/s41559-025-02849-7

उत्तरी आंध्र प्रदेश के खास कार्यक्रम में आर्थिक और पक्षी संख्या संबंधी परिणाम। भोजन समूह और प्रजाति के अनुसार मॉडल के परिणाम अलग हैं; चुने समूहों के अनुमान और अनिश्चितता अंतराल अध्याय12 में दिए हैं। चक्र 12S में स्थल चयन, उपज के लिए कटाई और लाभ के लिए खेत के स्तर पर मिलान तथा मापी विशेषताओं के मेल को अलग पढ़ा।

मिलान वाला निरीक्षण आधारित कार्यक्रम मूल्यांकन, सभी जैव विविधता की गणना नहीं। मुख्य लेख और पूरक के चुने हिस्से जाँचे; पूरा पूरक, मूल आँकड़े और कोड का स्वतंत्र विश्लेषण बाकी। फसल सुरक्षा सेवा, पूरे भारत का प्रभाव, मिट्टी कार्बन हटाना या क्रेडिट जारी होना स्थापित नहीं। किस्म की ठीक पहचान सत्यापित नहीं थी; समान बीज-आपूर्ति समय पर लेखकों की धारणा थी। मिलान में अच्छा मेल हर अज्ञात कारण को समाप्त नहीं करता। पूरक चित्र 7 के खेत-लाभ शीर्षक और कटाई-गिनती वाले कैप्शन का अंतर खुला है। मूल आँकड़ों या मिलान को फिर नहीं चलाया। अध्याय12 का दो भेंट वाला 8/12 उदाहरण पुस्तक का बनाया हुआ गिनती अभ्यास है; उससे वास्तविक पक्षी आबादी या घनत्व का बदलाव या न दिखे पक्षियों की संख्या नहीं निकलती। प्रभावी सर्वेक्षण क्षेत्र निरीक्षण प्रक्रिया के मॉडल से आता है, फार्म की जमीन सीमा नहीं है। प्रपत्र झ का अभिलेख ढाँचा और अध्याय20 की जानकारी लौटाने की प्रक्रिया पुस्तक का प्रस्ताव है, लेख का डेटा शब्दकोश या स्थानीय रूप से स्वीकृत सर्वेक्षण प्रक्रिया नहीं। अध्याय13 का क/ख निर्णय और सुधार क्रम गढ़ा शिक्षण अभ्यास है। परिशिष्ट की पारिवारिक श्रम दर और खेत के सालाना लाभ की सीमा से स्थानीय मजदूरी नियम, परिवार का बैंक शेष या खास कामगार को पैसा मिलना सिद्ध नहीं होता।

S06 · Quantifying the contribution of individual inputs used in Zero Budget Natural Farming

Duddigan et al. · 2024

https://bsssjournals.onlinelibrary.wiley.com/doi/full/10.1111/sum.13126

दो मौसमों के पैकेज में एक-एक इनपुट हटाने की तुलना। मुख्य फसल की उपज और मापी प्रक्रिया अलग सवालों के उत्तर देते हैं।

जैविक या प्रचलित खेती से नई तुलना, सिद्ध आपसी तालमेल या दीर्घकालीन पोषक पर्याप्तता नहीं। पूरा पूरक और मूल आँकड़ों तथा कोड की समीक्षा बाकी है। चक्र 12R में प्रकाशक के पूरक और ज़ेनोडो से सामान्य अनुरोधों पर 403 मिला; रिपॉज़िटरी में पहुँच अस्वीकृत रही। फ़ाइल का नाम और सूची मिले, उसकी सामग्री नहीं। AppendixS1 की तालिकाएँ S1–S12 अब भी अपठित हैं।

S07 · VM0042 Improved Agricultural Land Management v2.2

Verra · Active since 21 October 2025

https://verra.org/methodologies/vm0042-improved-agricultural-land-management-v2-2/

कृषि जलवायु परिणाम के लिए शुरुआती तुलना, अतिरिक्तता, गणना और अनिश्चितता की जरूरत समझने का संबंधित ढाँचा।

विभिन्न चरणों में प्रयोज्यता, भंडार और स्रोत सीमाएँ, आधार विवरण, अतिरिक्तता तथा गणना और अनिश्चितता के चुने प्रावधान पढ़े गए हैं। इस समीक्षा में परियोजना शुरू होने से पहले का प्रबंधन और गतिविधि क्रम बनाने की न्यूनतम पिछली अवधि फिर देखी गई। शुरुआती माप, शोध का तुलना समूह और क्रेडिट का आधार-परिदृश्य अलग हैं। पूरी विधि, सुधार, संबंधित उपकरण, कार्यक्रम नियम और स्थानीय प्रमाण की जाँच बाकी है; पायलट पात्र या विधियों का संयोजन स्वीकृत घोषित नहीं है।

S08 · Corrections and Clarifications to VM0042 v2.2

Verra · 11 June 2026

https://verra.org/wp-content/uploads/2026/06/VM0042v2.2_CC_11JUN2026.pdf

संस्करण 2.2 के वर्तमान उपयोग में प्रकाशित सुधारों को शामिल करना जरूरी है।

आधार और पुनर्माप के चुने स्पष्टीकरण तथा गणना के चुने सुधार अलग चरणों में पढ़े गए। इस समीक्षा में संशोधित तालिका 4, स्पष्टीकरण 3 के समूह क्षेत्र और नई जुड़ने वाली इकाई का अंतर तथा पिछली अवधि का पाठ देखा गया। प्रभावित पुरानी प्रथा का मेल प्रवेश की एक कसौटी है; यह पूरी पात्रता जाँच नहीं। कृषि भूमि और घासभूमि की अलग पहचान बनी रहे। पूरे कार्यक्रम, उपकरण, नमूना-रचना, अतिरिक्तता और परियोजना प्रमाण की समीक्षा बाकी है।

S11 · National Programme for Organic Production Eighth Edition

APEDA Government of India · 2024

https://npop.apeda.gov.in/sites/default/files/2024-10/NPOP_Eight_Edition_2024.pdf

2024 के आठवें संस्करण में विविध फसलें और पोषक पुनर्चक्रण शामिल हैं। संचालक के कार्य-दायरे और लेनदेन के प्रमाणपत्र अलग हैं; प्रमाणित उत्पादों की पहचान जरूरी है।

2024 संस्करण की चुनी धाराएँ और S54 का सीमित संशोधन देखा है; सभी वर्तमान संशोधनों, आवेदन, रूपांतरण और सामग्री की अनुमति की जाँच पूरी नहीं। किसी खेत, सामग्री या उत्पाद को पात्र या प्रमाणित नहीं कहा गया।

S13 · Potential yield challenges to scale-up of zero budget natural farming

Smith, Yeluripati, Smith and Nayak · 2020

https://www.nature.com/articles/s41893-019-0469-x

कम और अधिक इनपुट की संभावनाएँ, पोषक सीमा तथा मिट्टी पुनर्जीवन को अलग करता है। यह साहित्य और अनुकरण का विश्लेषण है, नया कटाई प्रयोग नहीं।

साहित्य और अनुकरण का राष्ट्रीय उर्वरक उपयोग से तुलनात्मक विश्लेषण है, स्थानीय फसल जरूरत की माप या नया कटाई प्रयोग नहीं। पूरक गणना और मॉडल कोड का स्वतंत्र परीक्षण बाकी है। कोई सार्वभौमिक हानि दर या स्थानीय पूर्वानुमान नहीं अपनाया गया। नया सालाना खाता सीखने का काल्पनिक उदाहरण है, स्रोत के आँकड़े नहीं।

S54 · Amendment of Annex 3(17) of the NPOP 8th Edition

APEDA, Government of India · 18 May 2026

https://apeda.gov.in/sites/default/files/announcements/Notification_on_amendment_Annex3_17_NPOP_8th_Edition.pdf

मसौदे पर सुझाव माँगने और लागू संशोधन में अंतर। 18 मई 2026 से लागू अनुलग्नक प्रसंस्कृत जैविक खाद्य में मिलाए जाने वाले पदार्थों के लिए है।

चुना नोटिस और अनुलग्नक का दायरा देखा; सभी संशोधनों, हर पदार्थ की अनुमति, खेत के छिड़काव या किसी व्यक्ति के प्रमाणन की जाँच नहीं। वास्तविक गतिविधि के लिए लागू आवश्यकताएँ अलग जाँचें।

अगला कदम



मूंग के बीज और तीन पत्तियों वाली टहनी। भारतीय फसल का मौलिक चित्र; किसी वास्तविक किसान से भेंट का विवरण नहीं।

अभ्यास, लागत, पारिस्थितिकी, कार्बन मान्यता और प्रस्तावित पायलट के लिए पूरी पुस्तक पढ़ें।